# कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN:2583-4991

● भोपाल मंगलवार 17 से 23 नवम्बर 2026 ● वर्ष-27 ● अंक-26 ● पृष्ठ-16 ● मूल्य-13 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र.एम.पी./भोपाल/625/2024-26







# स्मार्ट खेती से ही विकसित भारत का लक्ष्य पूरा होगाः मोदी

**नई दिल्ली।** प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि विकसित भारत का निर्माण खेती को विकसित और आधुनिक बनाए बिना तथा किसानों को सशक्त किए बिना संभव नहीं है। किसानों की समृद्धि के लिए गेहूं, चावल और गन्ने जैसी पारंपरिक फसलों के साथ कृषि आधारित अन्य गतिविधियों और विविध फसलों को भी बढ़ावा देना आवश्यक है। इससे किसानों के लिए आय के अनेक स्रोत विकसित होंगे और खेती अधिक लाभकारी बनेगी। प्रधानमंत्री किसान तक भारत कृषि सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

श्री मोदी ने कहा कि बीते दशक में भारत की कृषि विकास दर औसतन 4 प्रतिशत से अधिक रही है। आजादी के बाद पहली बार किसी दशक में कृषि क्षेत्र ने यह उपलब्धि हासिल की है। इसी अवधि में ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी में भी तेजी से कमी आई है। उन्होंने विश्व बैंक की एक रिपोर्ट का उल्लेख करते हुए कहा कि पिछले 12-13 वर्षों में देश के लगभग 50 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आये हैं। उन्होंने बताया कि भारत हर साल चार लाख करोड़ रुपये से अधिक का कृषि निर्यात कर रहा है। देश दूध और दाल उत्पादन में दुनिया में पहले स्थान पर है। जूट, चावल और मोटे अनाज के उत्पादन में भी भारत अग्रणी है। गेहूं, कपास, फल-सब्जियों और मछली उत्पादन में भारत दुनिया के प्रमुख उत्पादक देशों में शामिल है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कृषि क्षेत्र में विभिन्न क्रांतियों का उल्लेख करते हुए कहा कि हरित क्रांति ने खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त किया, जबकि श्वेत क्रांति ने भारत को दुनिया का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक बनाया।

## कृषि क्षेत्र की औसत विकास दर पहली बार 4% से अधिक



पिछले एक दशक में देश का दूध उत्पादन लगभग 70 प्रतिशत और अंडा उत्पादन करीब 90 प्रतिशत बढ़ा है। नीली क्रांति के तहत मछली उत्पादन दोगुने से अधिक हुआ है। वहीं, मधुमक्खी पालन और स्वीट रिवोल्यूशन से शहद उत्पादन लगभग 80 हजार टन से बढ़कर डेढ़ लाख टन तक पहुंच गया है। उन्होंने बताया कि बागवानी उत्पादन भी 280 मिलियन टन से बढ़कर 350 मिलियन टन से अधिक हो गया है। इन सभी क्षेत्रों को एक व्यापक दृष्टिकोण से जोड़ने पर किसानों के लिए आय के कई विकल्प तैयार होंगे। उन्होंने बताया कि वर्ष 2014 में देश में कुछ सौ मृदा परीक्षण प्रयोगशालाएं थीं, जिनकी संख्या अब बढ़कर 8,400 से अधिक हो गई है। देश में 725 से अधिक कृषि विज्ञान केंद्र भी किसानों को तकनीकी जानकारी और प्रशिक्षण उपलब्ध करा रहे हैं। पशुधन संरक्षण पर जोर देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि खुरपका-मुंहपका रोग से पशुओं की सुरक्षा के लिए आठ करोड़ से अधिक किसानों के पशुओं को मुफ्त टीके लगाए गए हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा कि किसानों पर खेती की लागत का बोझ कम करना सरकार की प्राथमिकता है। किसानों को सस्ती खाद उपलब्ध कराने के लिए पिछले 12 वर्षों में 16 लाख करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं। उन्होंने कहा कि यह बहुत बड़ी राशि है और दुनिया के कई देशों का सालाना बजट भी इससे कम है। प्रधानमंत्री ने किसान तक भारत कृषि सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में उर्वरकों की कीमतें काफी अधिक होने के बावजूद सरकार किसानों को रियायती दरों पर खाद उपलब्ध करा रही है।

# आधुनिक तकनीक व नवाचार से खेती को बनाएंगे लाभ का धंधाः डॉ. यादव

## प्राकृतिक एवं जैविक खेती, फसल विविधीकरण और सिंचाई विस्तार पर जोर

**भोपाल।** मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश में कृषि को लाभकारी, आधुनिक और रोजगारपरक बनाने के लिए आधुनिक तकनीक, निवेश और नवाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है। किसानों की आय बढ़ाने, उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि और खेती की लागत कम करना सरकार की प्राथमिकता है।



मुख्यमंत्री नई दिल्ली मंडपम में आयोजित भारत एग्रीकल्चरल कॉन्फ्रेंस को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक एवं जैविक खेती, फसल विविधीकरण, जल संरक्षण और सिंचाई सुविधाओं के विस्तार पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। किसानों को परंपरागत खेती के साथ उन्नत कृषि तकनीकों और लाभकारी गतिविधियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। डॉ. यादव ने बताया कि कृषि क्षेत्र में निवेश आकर्षित करने और कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए सिंगल विंडो क्लीयरेंस व्यवस्था को प्रभावी बनाया जा रहा है। इसके माध्यम से निवेशकों को विभिन्न विभागों की आवश्यक अनुमतियां एक ही व्यवस्था के तहत उपलब्ध कराने का प्रयास है, जिससे निवेश और रोजगार के नए अवसर विकसित होंगे। उन्होंने कहा कि अधिक कृषि भूमि को सिंचाई के दायरे में लाने के लिए सुविधाओं और कृषि अधोसंरचना का विस्तार किया जा रहा है।

# रबी सीजन के लिए पीएंडके उर्वरकों पर 62,370 करोड़ की सब्सिडी को मंजूरी

## डीएपी-एनपीकेएस सहित फॉस्फेट-पोटाश उर्वरक रियायती दरों पर मिलेंगे

**नई दिल्ली।** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में हुई केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में रबी सीजन 2026-27 के लिए फॉस्फेट एवं पोटाश उर्वरकों पर पोषक तत्व आधारित सब्सिडी की दरों को मंजूरी दी गई। सरकार इस सीजन में उर्वरक सब्सिडी पर लगभग 62,370.02 करोड़ रुपये खर्च करेगी। यह राशि पिछले रबी सीजन के मुकाबले 24,417.73 करोड़ रुपये अधिक है।

रबी 2025-26 में पीएंडके उर्वरकों के लिए 37,952.29 करोड़ रुपये का बजट निर्धारित किया गया था। नये प्रावधान के साथ सब्सिडी बजट में करीब 64 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में उर्वरकों और उनके निर्माण



में इस्तेमाल होने वाले कच्चे माल की कीमतों में बदलाव को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है। मंजूर एनबीएस दरें 1 अक्टूबर 2026 से 31 मार्च 2027 तक प्रभावी रहेंगी। इस अवधि में डीएपी और एनपीकेएस ग्रेड सहित पीएंडके उर्वरकों की 28 श्रेणियों पर सब्सिडी दी जाएगी।

**शेष पेज 2 पर**

# रबी फसलों की बुवाई 17 फीसदी कम

## गेहूं की बुवाई पिछले साल साल से 12 फीसदी घटी

**नई दिल्ली।** देश में रबी फसलों की बोआई की रफ्तार इस साल पिछले वर्ष के मुकाबले अभी भी धीमी बनी हुई है। इसकी वजह कमजोर और असमान मॉनसून है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक देश में 108.66 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में रबी फसलें बोई जा चुकी हैं। पिछली समान अवधि में यह आंकड़ा 131.26 लाख हेक्टेयर था। इस तरह रबी फसलों के रकबा में पिछले साल की तुलना में 17.21 फीसदी की कमी दर्ज की गई है।

रबी फसलों का सामान्य रकबा 645.15 लाख हेक्टेयर है। वर्ष 2025-26 में इन फसलों का अनुमानित कुल क्षेत्रफल 749.53 लाख हेक्टेयर था। इसके मुकाबले अभी तक करीब 14.5 फीसदी क्षेत्र में ही बोआई हो पाई है।

रबी की प्रमुख फसल गेहूं की बोआई भी पिछले साल के मुकाबले पीछे चल रही है। अब तक 19.77 लाख हेक्टेयर में गेहूं बोया गया है, जो पिछली समान अवधि से 12.02 फीसदी कम है। दलहन फसलों के मोर्चे पर भी बोआई की रफ्तार कमजोर है। कुल दलहन का रकबा पिछले साल के 37.30 लाख हेक्टेयर के मुकाबले 14.39 फीसदी घटकर 31.93 लाख हेक्टेयर रह गया है। चना की बोआई में सबसे अधिक गिरावट देखने को मिली है। इसका रकबा 21.61 फीसदी घटकर



21.36 लाख हेक्टेयर रह गया। हालांकि, मसूर, उड़द, मूंग की बोआई में इजाफा हुआ है। तिलहन फसलें भी इस साल कम बोई जा रही हैं और इनका रकबा सालाना आधार पर 23.61 फीसदी घटकर 42.08 लाख हेक्टेयर रह गया। इन फसलों में सरसों एवं राई की बोआई सबसे ज्यादा प्रभावित हुई है। इनका रकबा पिछले साल के 54.02 लाख हेक्टेयर से 25.39 फीसदी घटकर 40.31 लाख हेक्टेयर रह गया। हालांकि मूंगफली की बोआई में 54.39 फीसदी और अलसी में 109.01 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। श्री अन्न एवं मोटे अनाज की श्रेणी में भी बोआई का रकबा पिछले साल के मुकाबले 17.47 फीसदी कम है। अब तक 8.15 लाख हेक्टेयर में बोआई हुई है, जबकि पिछले साल इसी अवधि में यह आंकड़ा 9.87 लाख हेक्टेयर था। जौ की बोआई में 65.67 फीसदी और मक्का में 23.14 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है।

# जलवायु अनुकूल कृषि और जैव विविधता संरक्षण के लिए राष्ट्रीय रोडमैप तैयार

**भुवनेश्वर।** ओडिशा ने मोटे अनाज आधारित कृषि को बढ़ावा देने, कृषि जैव विविधता के संरक्षण और जलवायु अनुकूल खेती को प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय रोडमैप तैयार किया है। इसके तहत वर्ष 2047 तक मोटे अनाज की खेती का रकबा वर्तमान 1.79 लाख हेक्टेयर से बढ़ाकर 5 लाख हेक्टेयर करने और 8 लाख मीट्रिक टन उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।



इस दिशा में भुवनेश्वर में कृषि जैव विविधता संरक्षण, जलवायु-सहनीय कृषि और सतत खाद्य प्रणालियों पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यक्रम शुरू हुआ। कार्यक्रम में डेयर के सचिव और आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. एम.एल. जाट ने कहा कि ओडिशा की समृद्ध कृषि जैव विविधता का उपयोग जलवायु परिवर्तन, मृदा स्वास्थ्य और पोषण संबंधी चुनौतियों से निपटने में किया जाना चाहिए। मोटे अनाज न केवल पोषण सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण हैं, बल्कि कम पानी और प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों में भी इनकी खेती उपयोगी साबित होती है। उन्होंने स्थानीय खाद्य प्रणालियों को बढ़ावा देने और वन हेल्थ दृष्टिकोण अपनाने पर जोर दिया।

डॉ. जाट ने ओडिशा श्री अन्न अभियान की सराहना करते हुए इसे मोटे अनाज आधारित कृषि परिवर्तन का राष्ट्रीय मॉडल बताया। उन्होंने बताया कि खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में रागी की 7.5 लाख क्विंटल खरीद की गई, जबकि 2025-26 के लिए 8 लाख क्विंटल खरीद का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने मोटे अनाज की स्थानीय किस्मों के संरक्षण पर विशेष जोर दिया।

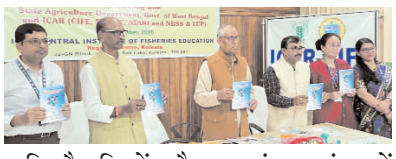
ओडिशा में फिंगर मिलेट (रागी) की 163 दर्ज किस्में उपलब्ध हैं। इनमें कालिया, बाटी, मामी और भारती जैसी पारंपरिक किस्मों को संरक्षित एवं प्रोत्साहित करने की आवश्यकता बताई गई। डॉ. जाट ने आईसीएआर-भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के साथ अनुसंधान सहयोग बढ़ाने और ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में मोटे अनाज उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करने का प्रस्ताव भी रखा। कार्यक्रम में कृषि नवाचारों, स्थानीय फसल किस्मों और मोटे अनाज आधारित उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई गई। किसानों के साथ संवाद भी किया गया।

# कृषि विकास के लिए केंद्र और राज्यों में बेहतर समन्वय जरूरी : श्री ठाकुर

## प्राकृतिक खेती, सतत कृषि और किसान हितैषी तकनीकों के प्रसार पर दिया जोर

**कोलकाता।** केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री रामनाथ ठाकुर ने कृषि विकास और किसानों की आय एवं आजीविका में सुधार के लिए केंद्र तथा राज्य सरकारों के बीच बेहतर समन्वय और सहयोग की आवश्यकता बताई है। उन्होंने प्राकृतिक खेती, सतत कृषि पद्धतियों और आधुनिक कृषि तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने पर विशेष जोर दिया। श्री ठाकुर ने आईसीएआर-केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान के कोलकाता केंद्र का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि कृषि विकास कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए केंद्र एवं राज्य सरकारों, कृषि अनुसंधान संस्थानों और अन्य संबंधित संस्थाओं को मिलकर काम करना होगा। सहयोगात्मक अनुसंधान, तकनीकी प्रसार, किसानों के क्षमता निर्माण और संस्थागत समन्वय से कृषि उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिलेगी।

उन्होंने कहा कि मृदा स्वास्थ्य बनाए रखने, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और रासायनिक कृषि आदानों पर निर्भरता कम करने के लिए प्राकृतिक खेती एवं टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना जरूरी है।



कृषि वैज्ञानिकों और अनुसंधान संस्थानों को ऐसी तकनीकें विकसित करनी चाहिए, जो किसानों के लिए उपयोगी, आर्थिक रूप से किफायती और पर्यावरण के अनुकूल हों। कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल के कृषि मंत्री दूध कुमार मंडल विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। आईसीएआर-सीआईएफई कोलकाता केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. टी.के. घोषाल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों के विकास में संस्थागत सहयोग की भूमिका पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर विभिन्न कृषि संबंधी प्रकाशनों का विमोचन किया गया तथा अतिथियों का सम्मान किया गया। साथ ही पश्चिम बंगाल सरकार के कृषि विभाग और आईसीएआर-सीआईएफई, आईसीएआर-एनआईएनएफईटी, आईसीएआर-एटीएआरआई तथा आईसीएआर-एनबीएसएसएंडएलयूपी के प्रतिनिधियों के साथ समीक्षा बैठक आयोजित की गई।

# किसानों के पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक अनुसंधान और बाजार से जोड़ने पर जोर: डॉ. मिश्रा

**नई दिल्ली।** प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव डॉ. पी.के. मिश्रा ने कहा है कि किसानों के पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक अनुसंधान, गुणवत्तापूर्ण बीज प्रणाली और बाजार के अवसरों से जोड़ना जरूरी है। किसानों को केवल कृषि उत्पादन करने वाले के रूप में नहीं, बल्कि देश की कृषि जैव विविधता के संरक्षक और नवाचारकर्ता के रूप में भी मान्यता मिलनी चाहिए। डॉ. मिश्रा पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण (पीपीवीएफआरए) के 22वें स्थापना दिवस एवं प्लांट जीनोम सेवियर पुरस्कार समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यह अवसर पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण अधिनियम, 2001 के 25 वर्ष पूरे होने का भी प्रतीक है। उन्होंने कहा कि भारत की समृद्ध कृषि जैव विविधता जलवायु परिवर्तन, पानी की कमी, कीट एवं बीमारियों से निपटने में सक्षम फसल किस्मों के विकास का महत्वपूर्ण आधार है। देश में 22 कृषि जैव विविधता क्षेत्र हैं। ओडिशा के कोरापुट को वर्ष 2012 में संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन ने विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण कृषि विरासत प्रणाली के रूप में मान्यता दी




थी। डॉ. मिश्रा ने बताया कि भारत का पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार कानून किसानों और पौधा प्रजनकों के अधिकारों के बीच संतुलन स्थापित करता है। पीपीवीएफआरए के अंतर्गत पंजीकृत लगभग आधी किस्में किसानों द्वारा विकसित की गई हैं। उन्होंने किसानों और पारंपरिक आनुवंशिक संसाधनों का संरक्षण करने वाले समुदायों को उचित लाभ दिलाने में लाभ-साझाकरण व्यवस्था के महत्व को भी रेखांकित किया। भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि आईसीएआर-एनबीपीजीआर का राष्ट्रीय जीन बैंक दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा जीन बैंक है। उन्होंने सामुदायिक बीज बैंकों और खेतों में जीन बैंकों को मजबूत बनाने, किसानों की पारंपरिक किस्मों को गुणवत्तापूर्ण बीज प्रणाली से जोड़ने तथा किसान उत्पादक संगठनों के माध्यम से व्यापक बाजार उपलब्ध कराने पर जोर दिया।

पेज एक का शेष

## रबी सीजन के लिए पीएंडके...

इसके माध्यम से किसानों को ये उर्वरक रियायती एवं उचित कीमतों पर उपलब्ध कराए जाएंगे। सब्सिडी की राशि उर्वरक कंपनियों को दी जाती है, जिससे अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कीमतें बढ़ने पर भी किसानों पर पूरी लागत का बोझ नहीं पड़ता। सरकार ने सब्सिडी दरें निर्धारित करते समय यूरिया, डीएपी, एमओपी और सल्फर की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों तथा कच्चे माल के बाजार का आकलन किया है। उल्लेखनीय है कि केंद्र सरकार ने पीएंडके उर्वरकों के लिए 1 अप्रैल 2010 से पोषक तत्व आधारित सब्सिडी योजना लागू की है। इसके तहत उर्वरकों में मौजूद नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटाश और सल्फर की मात्रा के आधार पर सब्सिडी निर्धारित की जाती है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार की कीमतों और उत्पादन लागत में बदलाव के अनुसार सरकार प्रत्येक सीजन में सब्सिडी दरों की समीक्षा करती है।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 13/- वार्षिक शुल्क- 700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube

उम्मीद से
ज़्यादा का वादा

ACE TRACTORS

50 HP Chetak DI 65 (4WD)

4 सिलिण्डर का 4088 CC दमदार इंजन



## विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्रयल क्लच
- हैवी डयूटी फ्रंट एक्सल (करारो)
- लिफ्ट 2000 kg
- आगे के टायर 9.5x24
- पीछे के टायर 16.9x28
- MRF Tyre



दमदार ट्रैक्टर
शानदार परफॉर्मेंस

DI 350 NG | 40 HP

## विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- ऑयल ब्रैक्स (तेल में डूबे)
- सिंगल / डूयल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

हर कदम हर डगर
ACE TRACTORS
हर किसान का हमसफर

100% Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15–90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन 1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.

Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India
Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

## साप्ताहिक सुविचार

धर्म, व्यक्ति एवं समाज, दोनों के लिये आवश्यक है।
– डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

## खेती के लिये वरदान संतुलित उर्वरक

*मानव स्वास्थ्य के लिये जिस तरह संतुलित एवं पौष्टिक भोजन जरूरी है उसी तरह मिट्टी की सेहत तंदुरुस्त रखने के लिये पौषक तत्व प्रबंधन के माध्यम से संतुलित उर्वरक उपयोग अत्यंत आवश्यक है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान अधिकतम उत्पादन लेने की होड़ के कारण रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध उपयोग ने मिट्टी की कोख को बंजर बना दिया है। आलम यह है कि बगैर रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से एक दाना पैदा नहीं हो सकता। असंतुलित मात्रा में किये जा रहे उर्वरक उपयोग से मिट्टी की परत अत्यधिक कठोर एवं विषाक्त हो गयी है। रासायनिक उर्वरकों के साथ ही रासायनिक कीटनाशक एवं नींदानाशकों से समूचा वातावरण जल, जमीन एवं वायु जहरमय हो गयी है। इसका दुष्परिणाम सबके सामने है। विषाक्त खाद्यान्न एवं फल, सब्जियां खाने से तरह-तरह की बीमारियों ने जकड़ लिया है। असंतुलित उर्वरक उपयोग के कारण किसानों की उत्पादन लागत भी बढ़ती जा रही है। साथ ही हम अपनी मिट्टी की सेहत के साथ बहुत बड़ा खिलवाड़ कर रहे हैं। यदि अभी भी अंधाधुंध रासायनिक उर्वरक उपयोग नहीं रोका गया तो वह दिन दूर नहीं होगा जब हम दाने-दाने को मोहताज होंगे। मिट्टी का स्वास्थ्य बरकरार रखने के लिये हमें संतुलित एवं पौषक तत्व आधारित उर्वरक उपयोग करने की जरूरत है।*

*फसलों के समुचित विकास के लिये 18 पौषक तत्वों की जरूरत होती है जबकि हमारे द्वारा बमुश्किल तीन या चार पौषक तत्व ही दिये जा रहे हैं। कई ऐसे पौषक तत्व हैं जिनकी मिट्टी में भारी कमी है, उसकी आपूर्ति अत्यधिक आवश्यक है। जिंक, बोरोन, मैग्नीशियम, कोबाल्ट, सल्फर ऐसे पौषक तत्व हैं जिनकी आपूर्ति भी मिट्टी को करनी चाहिये। मिट्टी के लिये सबसे बड़ा पौषक तत्व है गोबर की सड़ी खाद जो खेतों से कोसों दूर चली गयी है। गोबर खाद वर्ष भर में कम से कम एक बार अवश्य दिया जाना चाहिये। गोबर खाद की आपूर्ति से मिट्टी की परत मुलायम हो जाती है जिससे जल धारण क्षमता में वृद्धि होती है। साथ ही गोबर खाद वाली मिट्टी में मित्र कीट भी पनपते हैं जो फसलों के लिये अत्यधिक लाभदायक है। मिट्टी परीक्षण के आधार पर खेतों में उर्वरक उपयोग किया जाना चाहिए। जिन तत्वों की कमी हो उनकी आपूर्ति सुगमता से जरूरी है। नाइट्रोजन, फास्फोरस, कैल्शियम के साथ ही अन्य द्वितीयक पौषक तत्व भी दिया जाना आवश्यक है। संतुलित उर्वरक उपयोग के फायदे किसानों को बताये जाने चाहिए। किसानों को प्रशिक्षण के माध्यम से संतुलित एवं पौषक तत्व आधारित उर्वरक उपयोग की सलाह जरूरी है। इसके लिये कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग के मैदानी अधिकारियों द्वारा किसानों को समझाईश दी जानी चाहिए। असंतुलित उर्वरक उपयोग से होने वाले नुकसान की जानकारी प्रत्येक किसान तक पहुंचाने की जरूरत है।*

### 41वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक

# प्राकृतिक खेती और फसल विविधीकरण पर जोर




**धार।** कृषि विज्ञान केंद्र, धार की 41वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक केंद्र के सभागार में ऑनलाइन एवं ऑफलाइन माध्यम से आयोजित की गई। बैठक में खरीफ 2026 की उपलब्धियों की समीक्षा के साथ रबी 2026-27 की कार्ययोजना प्रस्तुत की गई। विशेषज्ञों ने जिले में अल्प वर्षा, जल संकट और संभावित सूखे की परिस्थितियों को देखते हुए कृषि तकनीकों, प्राकृतिक खेती, फसल विविधीकरण और किसानों की आय बढ़ाने के उपायों पर चर्चा की।

केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.एस. चौहान ने उपलब्धियों और आगामी कार्ययोजना का प्रस्तुतीकरण किया। किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग, धार के उपसंचालक विजय चौरासिया ने केंद्र के कार्यों और राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त पुरस्कारों की सराहना करते हुए कहा कि किसानों को बेहतर उत्पादन के साथ उपज के लिए उचित बाजार, आपूर्ति श्रृंखला और विपणन संपर्क उपलब्ध ०कराना भी जरूरी है। कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी) के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. ए. राउत ने प्राकृतिक खेती और मृदा स्वास्थ्य सुधार के प्रयासों को आगे बढ़ाने पर जोर दिया। निदेशालय विस्तार सेवायें, ग्वालियर के विशेषज्ञ वैज्ञानिक डॉ. आर.सी. आसवानी ने उद्यानिकी फसलों में बाजार की मांग के अनुरूप नई, रोग प्रतिरोधी और बेहतर गुणवत्ता वाली किस्मों को बढ़ावा देने का सुझाव दिया।

कृषि महाविद्यालय, इंदौर के वैज्ञानिक डॉ. संदीप सिंह तोमर ने उद्यानिकी फसलों पर प्रशिक्षण बढ़ाने, किसानों को उपयोगी वीडियो सामग्री उपलब्ध कराने और दोनों कृषि मौसमों में उत्पादन बढ़ाकर फसल सघनता में सुधार करने का सुझाव दिया। पशुपालन विभाग के डॉ. आर.एस. सिसौदिया ने पशुपोषण, कृत्रिम गर्भाधान और आवास प्रबंधन पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने की बात कही। आत्मा परियोजना के संचालक के.एस. झाणिया ने फसल विविधीकरण और फसल चक्र अपनाने के लिये किसानों को प्रेरित करने का सुझाव दिया। बैठक में नैनो उर्वरकों के उपयोग, मृदा स्वास्थ्य पत्रक के अनुसार पोषक तत्वों के प्रयोग और कृषि प्रदर्शनों के प्रभाव का आकलन करने के सुझाव भी दिये गये। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अंकिता पांडेय ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ. डी.एस. मंडलोई ने किया।

## फसल अवशेषों का करें वैज्ञानिक प्रबंधन खेत में नरवाई जलाने से बचें किसान



**सीहोर।** कृषि विज्ञान केंद्र, रायसेन एवं किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग, सीहोर तथा सहायक कृषि यंत्री कार्यालय के संयुक्त तत्वावधान में सीहोर जिले के भैरूं दा विकासखंड के ग्राम दिगवाड़ा एवं पाडलिया में फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के अंतर्गत कृषक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जनप्रतिनिधि तुकाराम पवार, कृषि विज्ञान केंद्र रायसेनके वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. स्वप्निल दुबे, सीआरएम परियोजना प्रभारी डॉ. मुकुल कुमार, मृदा वैज्ञानिक डॉ. रंजीत सिंह राघव तथा सहायक कृषि यंत्री सीहोर के योगीराज सावकर प्रमुख रूप से उपस्थित थे। डॉ. स्वप्निल दुबे ने किसानों को नरवाई प्रबंधन के लिए हार्वेस्टर में स्ट्रॉ मैनेजमेंट सिस्टम लगवाने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि यह सिस्टम कंबाइन हार्वेस्टर के पीछे लगाया जाता है, जो कटाई के दौरान फसल के बचे हुए डंठलों और भूसे को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर खेत में समान रूप से फैला देता है। इससे नरवाई जलाने की आवश्यकता नहीं रहती। सीआरएम परियोजना के प्रभारी डॉ. मुकुल कुमार ने बताया कि फसल अवशेष प्रबंधन के लिए जीरो टिलेज मशीन, सुपर सीडर, हैप्पी सीडर, स्मार्ट सीडर, मल्चर एवं थ्रेशर जैसे कृषि यंत्रों का उपयोग करना चाहिए। मृदा वैज्ञानिक डॉ. रंजीत सिंह राघव ने बताया कि नरवाई जलाने से कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड और ब्लैक कार्बन जैसी हानिकारक गैसें निकलती हैं, जिनका मिट्टी एवं मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। सहायक कृषि यंत्री कार्यालय के प्रतिनिधि ने बताया कि उन्नत कृषि यंत्रों पर अनुदान प्राप्त करने के लिए किसान ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। कार्यक्रम में कृषि विस्तार अधिकारी अशोक कुमार उइके, कृष्ण गोपाल उइके, सोनाली कुशवाह एवं साधना परमार ने विभागीय योजनाओं तथा जैविक एवं प्राकृतिक खेती के संबंध में किसानों को विस्तार से जानकारी दी।

## विधायक विजयपाल सिंह को कृषक दूत भेंट किया



**सोहागपुर।** कृषक दूत संवाददाता पंडित राजेश कुमार रिछारिया ने बाबई-सोहागपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक ठाकुर विजयपाल सिंह से मुलाकात कर कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक समाचार पत्र 'कृषक दूत' का रबी विशेषांक भेंट किया। इस अवसर पर विशेषांक में प्रकाशित कृषि संबंधी उपयोगी जानकारियों, रबी फसलों की उन्नत तकनीकों एवं किसानों के हितों से जुड़े विषयों पर चर्चा की गई।

## अनमोल वचन

यदि मार्ग कांटों भरा हो, और आप नंगे पांव हों तो रास्ता बदल लेना चाहिए। – चाणक्य

## पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

**कार्तिक शुक्ल /अगहन कृष्णविक्रम संवत 2083 ईस्वी सन् 2026**

| दिनांक | दिन | तिथि | व्रत/ त्यौहार |
|---|---|---|---|
| 17 नवम्बर 26 | मंगलवार | कार्तिक शुक्ल 8 | पंचक 11.52 दिन से |
| 18 नवम्बर 26 | बुधवार | कार्तिक शुक्ल 9 | पंचक, आंवला नवमी |
| 19 नवम्बर 26 | गुरुवार | कार्तिक शुक्ल 10 | पंचक |
| 20 नवम्बर 26 | शुक्रवार | कार्तिक शुक्ल 11 | पंचक देवउठनी ग्यारस |
| 21 नवम्बर 26 | शनिवार | कार्तिक शुक्ल 12 | पंचक 3.19 रात तक |
| 22 नवम्बर 26 | रविवार | कार्तिक शुक्ल 13 | प्रदोष व्रत |
| 23 नवम्बर 26 | सोमवार | कार्तिक शुक्ल 14 | बैकुंठ चतुर्दशी |
| 24 नवम्बर 26 | मंगलवार | कार्तिक शुक्ल 15 | स्नानदान पूर्णिमा |
| 25 नवम्बर 26 | बुधवार | अगहन कृष्ण 1 | |
| 26 नवम्बर 26 | गुरुवार | अगहन कृष्ण 2 | |
| 27 नवम्बर 26 | शुक्रवार | अगहन कृष्ण 3 | |
| 28 नवम्बर 26 | शनिवार | अगहन कृष्ण 4 | |
| 29 नवम्बर 26 | रविवार | अगहन कृष्ण 5 | |
| 30 नवम्बर 26 | सोमवार | अगहन कृष्ण 6-7 | |

● संदीप कुमार शर्मा (मौसम वैज्ञानिक)
कृषि विज्ञान केंद्र रीवा (म.प्र.)

# मटर की उन्नत खेती कैसे करें?



**दलहनी सब्जियों में मटर का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। मटर की खेती से जहां एक ओर कम समय में पैदावार प्राप्त की जा सकती है वहीं ये भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने में भी सहायक है। फसल चक्र के अनुसार यदि इसकी खेती की जाए तो इससे भूमि उपजाऊ बनती है।**

मटर में मौजूद राइजोबियम जीवाणु भूमि को उपजाऊ बनाने में सहायता है। यदि अक्टूबर व नबंवर माह के मध्य इसकी अगेती किस्मों की खेती की जाए तो अधिक पैदावार के साथ ही भूरपूर मुनाफा कमाया जा सकता है। आजकल तो बाजार में साल भर मटर को संरक्षित कर बेचा जाता है। वहीं इसको सुखाकर मटर दाल के रूप में भी इसका प्रयोग किया जाता है। तो आइए जानते हैं कि इस उपयोगी मटर की अगेती फसल की खेती कर किस प्रकार अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है।

## भूमि की तैयारी

मटर की खेती विभिन्न प्रकार की मृदाओं में की जा सकती है फिर भी गंगा के मैदानी भागों की गहरी दोमट मिट्टी इसके लिए सबसे अच्छी रहती है। मटर के लिए भूमि को अच्छी तरह तैयार करना चाहिए। खरीफ की फसल की कटाई के बाद भूमि की जुताई मिट्टी पलटने वाले हल करके 2-3 बार हैरो चलाकर अथवा जुताई करके पाटा लगाकर भूमि तैयार करनी चाहिए। धान के खेतों में मिट्टी के ढेलों को तोड़ने का प्रयास करना चाहिए। अच्छे अंकुरण के लिए मिट्टी में नमी होना जरुरी है।

## बीजोपचार

उचित राजोबियम संवर्धक (कल्चर) से बीजों को उपचारित करना उत्पादन बढ़ाने का सवसे सरल साधन है। दलहनी फसलों में वातावरणीय नाइट्रोजन के स्थिरीकरण करने की क्षमता जड़ों में स्थित ग्रंथिकाओं की संख्या पर निर्भर करती है और यह भी राइजोबियम की संख्या पर भी निर्भर करता है। इसलिए इन जीवाणुओं का मिट्टी में होना जरुरी है। क्योंकि मिट्टी में जीवाणुओं की संख्या पर्याप्त नहीं होती हैए इसलिए राईजोबियम संवर्धक से बीजों को उपचारित करना जरूरी है।

## मटर की अगेती किस्म/मटर की अगेती किस्में व उनकी विशेषताएं

- **आर्किल:** यह व्यापक रूप से उगाई जाने वाली यह प्रजाति फ्रांस से आई विदेशी प्रजाति है। इसका दाना निकलने का प्रतिशत अधिक (40 प्रतिशत) है। यह ताजा बाजार में बेचने और निर्जलीकरण दोनों के लिए उपयुक्त है। पहली चुनाई बोआई के बाद 60-65 दिन लेती है। हरी फली के उपज 8.10 टन प्रति हेक्टेयर है।
- **बी.एल.: अगेती मटर- 7 (वीएल-7):** विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान अल्मोड़ा में विकसित प्रजाति है। इसका छिलका उतारने पर 42 प्रतिशत दाना के साथ 10 टन प्रति हेक्टेयर की औसत उपज प्राप्त होती है।
- **जवाहर मटर 3 (जे एम 3, अर्ली दिसम्बर):** यह प्रजाति जबलपुर में टी 19 व अर्ली बैजर के संकरण के बाद वरणों द्वारा विकसित की गई है। इस प्रजाति में दाना प्राप्ति प्रतिशत अधिक (45 प्रतिशत) होता है। बुवाई के 50-50 दिनों के बाद पहली तुड़ाई प्रारंभ होती है। औसत उपज 4 टन प्रति हेक्टेयर है।
- **जवाहर मटर-4 (जेएम 4):** यह प्रजाति जबलपुर में संकर टी 19 और लिटिल मार्वल से उन्नत पीड़ी वरणों द्वारा विकसित की गई थी। इसकी 70 दिनों के बाद पहली तुड़ाई शुरू की जा सकती है। इसके 40 प्रतिशत निकाले गए दानों से युक्त औसत फल उपज 7 टन प्रति हेक्टेयर होती है।
- **हरभजन (ईसी 33866):** यह प्रजाति विदेशी आनुवंशिक सामग्री से वरण द्वारा जबलपुर में विकसित की गई है। यह अधिक अगेती प्रजाति है और इसकी पहली चुनाई बुवाई के 45 दिनों के बाद की जा सकती है। इससे औसत फली उपज 3 टन प्रति हेक्टेयर प्राप्त की जा सकती है।
- **पंत मटर-2 (पीएम-2):** यह पंतनगर में संकर अर्ली बैजर व आई पीए 3 (पंत उपहार) से वंशावली वरण द्वारा विकसित हैं। इसकी बुवाई के 60-65 दिन बाद पहली चुनाई की जा सकती है। यह भी चूर्णिल फफूंदी के प्रति अधिक ग्रहणशील है। इसकी औसत उपज 7-8 टन प्रति हेक्टेयर प्राप्त की जा सकती हैं।
- **मटर अगेता (ई-6):** यह संकर मैसी जेम व हरे बोना से वंशावली वरण द्वारा लुधियाना पर विकसित बौनी, अधिक उपज देने वाली प्रजाति है। इसकी पहली चुनाई बोआई के बाद 50-55 दिनों के भीतर शुरू की जा सकती है। यह उच्च तापमान सहिष्णु है। 44 प्रतिश दाना से युक्त औसत फली उपज 6 टन प्रति हेक्टेयर प्राप्त की जा सकती है।
- **जवाहर पी-4:** यह जबलपुर में प्रजाति छोटी पहाड़ियों के लिए विकसित चूर्णिल फफूंदी प्रतिरोधी और म्लानि सहिष्णु प्रजाति है। इसकी पहली चुनाई छोटी पहाड़ियों में 60 दिन के बाद और मैदानों में 70 दिन के बाद शुरू होती है। छोटी पहाड़ियों में औसत फली उपज 3-4 टन प्रति हेक्टेयर और मैदानों में 9 टन प्रति हेक्टेयर प्राप्त की जा सकती है।
- **पंत सब्जी मटर:** यह जल्दी तैयार होने वाली प्रजाति है। इसकी फलियां लंबी और 8-10 बीजों से युक्त होती हैं। इसकी हरी फली उपज 9-10 टन प्रति हेक्टेयर प्राप्त की जा सकती है।
- **पंत सब्जी मटर-5:** यह जल्दी तैयार होने वाली प्रजाति है। यह प्रजाति चूर्णिल फफूंदी रोग प्रतिरोधी होती है। इसकी पहली हरी फली चुनाई 60 से 65 दिनों के भीतर की जा सकती है और बीज परिपक्वता बोआई के 100 से लेकर 110 दिनों में होती है। इसकी हरी फली उपज 90-100 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यह प्रजाति कुमाऊं की पहाड़ियों और उत्तराखंड के मैदानों में खेती के लिए उपयुक्त है।
- **इसके अलावा जल्दी तैयार होने वाली अन्य अगेती किस्में:** काशी नंदिनी, काशी मुक्ति, काशी उदय और काशी अगेती किस्में है जो 50 से 60 दिन में तैयार हो जाती हैं।

## मटर की बुवाई का सही समय /भूमि व जलवायु व बुवाई का समय

इसकी खेती के लिए मटियार दोमट और दोमट भूमि सबसे उपयुक्त होती है। जिसका पीएच मान 6-7.5 होना चाहिए। इसकी खेती के लिए अम्लीय भूमि सब्जी वाली मटर की खेती के लिए बिल्कुल उपयुक्त नहीं मानी जाती है। इसकी खेती के लिए अक्टूबर-नवंबर माह का समय उपयुक्त होता है। इस खेती में बीज अंकुरण के लिए औसत 22 डिग्री सेल्सियस की जरूरत होती हैए वहीं अच्छे विकास के लिए 10 से 18 डिग्री सेल्सियस तापमान बेहतर होता है।

## मटर की उन्नत खेती कैसे करें

खरीफ की फसल की कटाई के बाद भूमि की जुताई मिट्टी पलटने वाले हल करके 2-3 बार हैरो चलाकर अथवा जुताई करके पाटा लगाकर भूमि तैयार करनी चाहिए। धान के खेतों में मिट्टी के ढेलों को तोड़ने का प्रयास करना चाहिए। अच्छे अंकुरण के लिए मिट्टी में नमी होना जरुरी है।

## आवश्यक बीज दर व बुवाई का तरीका/मटर का पौधा

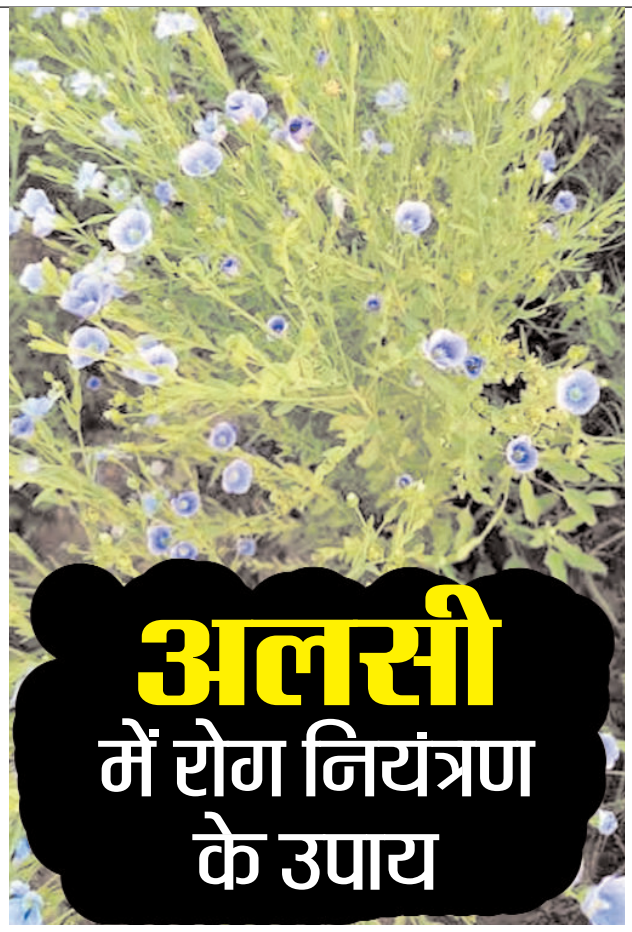
अगेती बुवाई के लिए प्रति हेक्टेयर 100 किलोग्राम बीज की आवश्यकता पड़ती है। इसकी बुवाई से पहले रोगों से बचाने के लिए इसे उपचारित कर लेना चाहिए।

(शेष पृष्ठ 12 पर)



● **डॉ. शुभम मिश्रा**
(फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर)
उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल (म.प्र.)
● **डॉ. के. एन. गुप्ता**
वैज्ञानिक, पौधा रोग, तिल एवं रामतिल परियोजना
जवाहरलाल नेहरू कृषि विवि., जबलपुर

# अलसी में रोग नियंत्रण के उपाय



**भारत में अलसी की खेती मुख्य रुप से मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, राजस्थान, कर्णाटक एवं पश्चिम बंगाल में की जाती है।**

अलसी के बीज से तेल निकलता है, इस तेल से साबुन भी बनाया जाता है। इसके पौधे से रेशा निकाला जाता है। रेशे से कपड़े एवं अच्छी गुणवत्ता वाले पेपर बनाये जाते हैं। इसमें अल्टरनेरिया झुलसा, रतुआ या गेरुई, उकठा एवं बुकनी रोग लगता है। इन रोगों की रोकथाम करके उत्पादन बढ़ाया जा सकता है।

- **गेरूआ रोग :** यह रोग मेलम्प्सोरा लाइनाइ से होता है। अलसी में गेरूआ रोग द्वारा अधिक हानि होती है।
- **लक्षण :** गेरूआ रोग में पत्तियों पर चमकीले पीले रंग के चूर्णी धब्बे दिखाई देते है तो शीघ्र ही सभी पत्तियों पर फैल जाते हैं। तने पर कत्थई या काले रंग के चकते दिखाई देते हैं। इनके कारण पौधे सूखने लगते हैं तथा कभी-कभी पूर्ण फसल नष्ट हो जाती है।

**प्रबंधन**

- बोआई पूर्व बीज कार्बोक्सीन+थीरम कवकनाशी से 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम से उपचारित करें।
- रोग निरोधक जातियाँ जैसे आर-575, 552, टी-397 एल.एस.73-25 बोयें।
- रोग के लक्षण दिखाई देने पर कार्बेन्डाजिम + मैन्कोजेब (0.25 प्रतिशत) के हिसाब से 15 दिन के अन्तर से 2-3 छिड़काव करें।
- **उकटा रोग :** यह रोग फ्यूजेरियम आक्सीस्पोरम के द्वारा होता है।
- **लक्षण :** रोगी पौधों की पत्तियां पीली पड़ जाती है तथा किनारे मुड़ जाते हैं। पौधे की नई कलियों की बढ़वार रूक जाती है। प्राय: पौधे के तने व पत्तियों कड़े हो जाते हैं। फलत: पूरा पौधा सूख जाता है। जड़ों और तनों का भीतरी उतक बदरंग हो जाता है।

**प्रबंधन**

- उकटा निरोधक जातियाँ जैसे जवाहर 23, जवाहर 552, एल.एन.एस. 62, आदि बोयें।
- उकटा की रोकथाम हेतु दीर्घ कालीन फसल चक्र भी अपनाना चाहिए।
- **पाउडरी मिल्ड्यू :** यह रोग लिनम यूसिटाटिसिमम से होता है। समय पर बोनी करने से यह रोग कम लगता है।
- **लक्षण :** प्रारम्भ में पत्तियों पर सफेद चूर्ण लिए हुए धब्बे प्रकट होते हैं। ये धब्बे पत्तियों के दोनों सतहों पर होते हैं। शुरू में ये धब्बे छोटे होते हैं और अनुकूल परिस्थितियों में पूरे पौधे पर फैल जाते हैं।

**प्रबंधन**

- अलसी की बुवाई अक्टूबर के पहले पखावाड़े मे करें।
- बीजों को मेटालेक्सिल (अप्रोन एस.डी.) 6 ग्राम या ट्राइकोड्रर्मा पाउडर 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोंपचार करें।
- रोग की प्रतिरोधी प्रजातियों का प्रयोग करें।
- बेहतर वायु संचार के लिये पौधों के बीच में पर्याप्त जगह छोड़कर फसलों का रोपण करें।
- पहला धब्बा दिखाई देने पर संक्रमित पत्तियों को हटा दें।
- गैर संवेदनशील फसलों के साथ चक्रीकरण अपनाएं।
- अत्याधिक संक्रमण को रोकने के लिये सल्फर, पत्तियों पर नीम तेल का छिड़काव करें।
- रोग के लक्षण दिखाई देने पर मैन्कोजेब 64प्रतिशत+मैटालैक्जिल 8व डब्ल्यू पी 2 प्रतिशत का छिड़काव करें, आवश्यकता पड़ने पर छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर दोहराएं।
- काराथेन 0.2 प्रतिशत घोल या सल्फेक्स 0.2 प्रतिशत या घुलनशील गंधक 0.3 प्रतिशत के दो तीन छिड़काव करना चाहिये।

नव वर्ष पर शुभचिंतकों, मित्रों एवं प्रिय ग्राहकों को भेंट का सर्वोत्तम उपहार

कृषक दूत डायरी 2027

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक




अब नए आकर्षक आकार में

कृषक दूत डायरी 2027 के प्रमुख आकर्षण

- केन्द्र एवं राज्य पोषित विभिन्न कृषि एवं अन्य योजनाओं की जानकारी।
- प्रमुख फसलों की कृषि कार्यमाला एवं उन्नत किस्मों की विस्तृत जानकारी।
- तहसील विकासखंड, कृषि उपज मंडियों की सूची।
- फसल उत्पादन संबंधी सांख्यिकीय।
- माहवार कैलेण्डर तिथि, व्रत एवं त्यौहारों की जानकारी।

कृषक दूत की सदस्यता लेकर डायरी मुफ्त पायें

संपर्क करें ➡ कृषक दूत

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824 मो. : 9300754675, 9827352535, 9425013875
Email:- krishak_doot@yahoo.co.in | Website : www.krishakdoot.org

# मूली की खेती फायदा अधिक देती

● डॉ. एस.के. त्यागी
विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान विज्ञान)
कृषि विज्ञान केन्द्र, खरगोन (म.प्र.)



**ज इ वाली सब्जियों में मूली का प्रमुख स्थान है। इसकी खेती सम्पूर्ण भारत वर्ष में की जाती है। इसका उपयोग सलाद के रुप में किया जाता है।**

- **जलवायु**- मूली के लिए ठण्डी जलवायु उपयुक्त होती है। लेकिन अधिक तापमान भी सह सकती है। मूली की सफल खेती के लिए 10-150 सेल्सियस तापमान सर्वोत्तम माना गया है।
- **भूमि**- सभी प्रकार की भूमि उपयुक्त रहती है। लेकिन रेतीली दोमट भूमि अधिक उपयुक्त रहती है।
- **भूमि की तैयारी**- मूली के लिए गहरी जुताई की आवश्यकता होती है। एक जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करने के बाद 2-3 बार कल्टीवेटर चलाकर भूमि को समतल कर लें।

### उन्नत किस्में

- **पूसा रेशमी** - इस किस्म का विकास संकरण द्वारा किया गया है। यह किस्म बुवाई के 55-60 दिन में तैयार हो जाती है। इसकी जड़े 30-35 सेमी. लम्बी, मध्यम मोटाई वाली शीर्ष में हरापन लिए हुए सफेद होती है।
- **पूसा चेतकी**- इस किस्म की जड़ें 15-20 सेमी. लम्बी, बिल्कुल सफेद, मोटी व ठूंठ के आकार की होती है। यह किस्म गर्म वातावरण के लिए उपयुक्त है।
- **पूसा हिमानी** - इस किस्म को संकरण द्वारा विकसित किया गया है। इस किस्म की जड़ें 30-35 सेमी. लम्बी, मध्यम मोटाई वाली, नीचे की ओर पतली होती है। रंग सफेद, गूदा कुरकुरा होता है। बुवाई के 50-60 दिन बाद तैयार हो जाती है।
- **पंजाब सफेद** - यह किस्म पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा विकसित की गई है। इस किस्म की जड़ें 30-40 सेमी. लम्बी और सफेद रंग की होती है। यह किस्म बुवाई के 50-55 दिन में तैयार हो जाती है।
- **कल्याणपुर** - इस किस्म का विकास चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय द्वारा किया गया है। इसकी जड़े सफेद, चिकनी, मुलायम और मध्यम लम्बी होती हैं। बुवाई के लगभग 40-45 दिन बाद फसल खुदाई के लिए तैयार हो जाती हैं।
- **अन्य उन्नत किस्में**- जोनपुरी मूली, जापानी सफेद, पंजाब अगेती, चाइनीज रोज, व्हाइट लांग, हिसार मूली आदि।
- **खाद एवं उर्वरक**- 150 क्विंटल गोबर की खाद या कम्पोस्ट, 100 किलो नाइट्रोजन, 50 किलो स्फुर तथा 100 किलो पोटाश प्रति हेक्टेयर आवश्यक है। गोबर की खाद, स्फुर तथा पोटाश खेत की तैयारी के समय तथा नाइट्रोजन दो भागों में बोने के 15 और 30 दिन बाद देनी चाहिए।
- **बीज की मात्रा**- मूली के बीज की मात्रा उसकी जाति, बोने की विधि और बीज के आकार पर निर्भर करती है। 5-10 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर आवश्यक होता है।
- **बुवाई का समय**- मूली साल भर उगाई जा सकती है, फिर भी व्यावसायिक स्तर पर इसे सितम्बर से जनवरी तक बोया जाता है।
- **बोने की विधि** - बीजों को क्यारियों में या मेड़ों पर कतारों में बोना चाहिए। पंक्तियों और पौधों की आपसी दूरी 30 सेमी और 10 सेमी. रखनी चाहिए। समतल खेत की अपेक्षा डौलियों पर बुवाई करने से मूली की जड़ों का विकास अच्छा होता है।
- **निराई-गुड़ाई** - खरपतवारों के नियंत्रण के लिए खेत की 2-3 बार निराई-गुड़ाई करें।
- **सिंचाई**- सिंचाई 10-15 दिन के अन्तर से सिंचाई करते रहें।
- **खुदाई**- जब जड़े पूर्ण विकसित हो जायें तब कड़ी होने से पहले मुलायम अवस्था में ही खोद लेना चाहिए।

### कीट नियंत्रण

- **माहो**- हरे सफेद छोटे-छोटे कीट होते हैं। जो पत्तियां का रस चूसते हैं। इस कीट की रोकथाम के लिए 2 मिली डायमिथोएट एक लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- **सरसों की मक्खी**- यह कीट काले रंग का होता है। जो कि पत्तियों को खाता हैं। खाई हुई पत्तियां कमजोर होकर झड़ जाती है। इस कीट की रोकथाम के लिए 2 मिली इण्डोसल्फान 35 ई.सी. को एक लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

# धरावरा में ग्रामीण सहभागिता मूल्यांकन कार्यक्रम संपन्न



**धार।** कृषि विज्ञान केंद्र, धार के मार्गदर्शन में ग्राम धरावरा में कृषि महाविद्यालय, इंदौर के रावे (ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव) विद्यार्थियों द्वारा ग्रामीणों की सहभागिता से ग्राम मूल्यांकन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य गांव की समस्याओं, उपलब्ध संसाधनों और विकास की संभावनाओं का आकलन कर कार्ययोजना तैयार करना था।

कार्यक्रम में कृषि प्रसार वैज्ञानिक डॉ. अंकिता ने ग्रामीणों को स्थानीय समस्याओं एवं आवश्यकताओं की पहचान में जनभागीदारी का महत्व बताया। वहीं उद्यानिकी वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. मण्डलोई ने कहा कि ग्रामीणों की भागीदारी से तैयार विकास कार्यों का रखरखाव भी बेहतर तरीके से होता है। इसमें महिलाओं, भूमिहीन मजदूरों और युवाओं की सहभागिता भी आवश्यक है।

कार्यक्रम के दौरान 14 रावे विद्यार्थियों ने ग्रामीणों के सहयोग से चार्ट पेपर एवं स्थानीय सामग्रियों द्वारा गांव का सामाजिक और संसाधन मानचित्र तैयार किया, जिसे बाद में रंगोली के माध्यम से जमीन पर प्रदर्शित किया गया। इसमें पेयजल स्रोतों, सड़कों, विद्यालयों, स्वास्थ्य केंद्रों और कृषि भूमि की स्थिति दर्शाई गई। चर्चा में जल स्तर सुधारने के लिए तालाबों एवं चेकडैम के निर्माण और जीर्णोद्धार, अंदरूनी सड़कों के सुदृढ़ीकरण, विद्यालयों में मूलभूत सुविधाओं तथा नियमित स्वास्थ्य शिविरों की मांग प्रमुखता से उठी। कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि ग्रामीणों द्वारा तैयार जमीनी रिपोर्ट एवं कार्ययोजना शासन स्तर पर भेजी जाएगी, ताकि विकास कार्यों में स्थानीय जरूरतों को प्राथमिकता मिले। कार्यक्रम में 30 किसानों, पंचायत प्रतिनिधियों तथा विभिन्न विभागों के अधिकारी-कर्मचारियों ने सहभागिता की। अंत में ग्रामीणों ने गांव के विकास में सक्रिय सहयोग का संकल्प लिया।



# बस्तर की 340 दुर्लभ जड़ी-बूटियों को प्राकृतिक आवास में

# सहेज रहा मां दंतेश्वरी एथनिक हर्बल गार्डन

## धन्वंतरि जयंती पर वनौषधियों के संरक्षण की शपथ, 'धनतेरस पर आयुर्वेद विश्व परिषद का विशेष आयोजन'

**कोंडागांव/बस्तर।** आयुर्वेद के प्रणेता भगवान धन्वंतरि के प्रकट दिवस एवं धनतेरस के पावन अवसर पर आयुर्वेद विश्व परिषद द्वारा भगवान धन्वंतरि अवतरण दिवस समारोह धूमधाम और श्रद्धापूर्वक मनाया गया। यह आयोजन मां दंतेश्वरी हर्बल परिसर स्थित बइठका हॉल में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का आयोजन आयुर्वेद विश्व परिषद, एमडी बोटैनिकल्स, जनजातीय शोध एवं कल्याण संस्थान, संपदा तथा मां दंतेश्वरी हर्बल समूह के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ आयुर्वेद विश्व परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राजाराम त्रिपाठी द्वारा भगवान धन्वंतरि की प्रतिमा के समक्ष संस्कृत मंत्रोच्चार के साथ विधिवत पूजा-अर्चना से हुआ। इसके पश्चात उपस्थित सभी सदस्यों ने भगवान धन्वंतरि की पूजा की और मानव कल्याण के लिए आयुर्वेद के आदर्शों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर बस्तर की आदिवासी महिलाओं के साथ मिलकर उनकी उगाई हुई जैविक जड़ी-बूटियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एमडी बोटैनिकल्स ब्रांड के रूप में स्थापित करने के अभियान में जुटी अपूर्वा त्रिपाठी ने कहा कि आज बाजार और सोशल मीडिया में हर्बल उत्पादों की भरमार दिखाई देती है, लेकिन वास्तविक गुणवत्ता और शुद्धता वाले हर्बल उत्पाद तलाशने पर भी आसानी से नहीं मिलते। बाजार में उत्पादों की बढ़ती संख्या के बावजूद उनकी गुणवत्ता और प्रामाणिकता एक बड़ी चुनौती बनी हुई है।

उन्होंने कहा कि यही कारण है कि मां दंतेश्वरी हर्बल समूह द्वारा स्वयं उगाई और तैयार की जा रही जड़ी-बूटियों की विश्वसनीयता निरंतर बढ़ रही है। हमारा प्रयास है कि बस्तर की आदिवासी महिलाओं के पारंपरिक ज्ञान, जैविक खेती और वनौषधियों को उचित पहचान मिले तथा उनके उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार में सम्मानजनक स्थान प्राप्त हो। इससे आदिवासी महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता और उनके पारंपरिक ज्ञान, दोनों को मजबूती मिलेगी।

आयुर्वेद विश्व परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राजाराम त्रिपाठी ने कहा कि यह हमारे समय की एक बड़ी विडंबना है कि एक ओर देश और विदेश में जड़ी-बूटियों तथा हर्बल उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही है, वहीं दूसरी ओर इन औषधीय वनस्पतियों के परंपरागत प्राकृतिक स्रोत तेजी से समाप्त होते जा रहे हैं। जंगलों में जड़ी-बूटियों की उपलब्धता घटने और उनकी मांग बढ़ने के कारण बाजार में मिलावटी जड़ी-बूटियों तथा नकली हर्बल उत्पादों का कारोबार भी बढ़ रहा है, जो अत्यंत चिंताजनक है।

उन्होंने कहा कि बस्तर सहित देश के अनेक वन क्षेत्रों में ऐसी दुर्लभ औषधीय वनस्पतियां हैं, जो अनियंत्रित दोहन और प्राकृतिक आवास के विनाश के कारण विलुप्ति की कगार पर पहुंच चुकी हैं। इनमें से कई प्रजातियां तो अपने प्राकृतिक आवास से लगभग समाप्त हो गई हैं। यदि समय रहते इनका संरक्षण नहीं किया गया, तो संभव है कि इनमें से कुछ वनस्पतियां दोबारा इस धरती पर कभी दिखाई ही न दें। यह केवल वनस्पतियों का नुकसान नहीं होगा, बल्कि हमारी हजारों वर्षों की पारंपरिक चिकित्सा पद्धति और वनवासी समुदायों के संचित ज्ञान की भी अपूरणीय क्षति होगी।

डॉ. त्रिपाठी ने बताया कि हमें यह बताते हुए विशेष प्रसन्नता है कि मां दंतेश्वरी हर्बल प्रोडक्ट्स तथा संपदा समाजसेवी संस्थान के सहयोग से लगभग पांच एकड़ भूमि पर 'मां दंतेश्वरी एथनिक हर्बल गार्डन' विकसित किया गया है। पिछले लगभग 25 वर्षों की सतत मेहनत और शोध के परिणामस्वरूप वर्तमान में यहां 340 प्रकार की औषधीय जड़ी-बूटियों का उनके प्राकृतिक आवास और अनुकूल पर्यावरण में संरक्षण, संवर्धन एवं प्रवर्धन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस हर्बल गार्डन का उद्देश्य केवल औषधीय पौधों को संग्रहित करना नहीं, बल्कि उन्हें उनके प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र के अनुरूप संरक्षित करना, उनकी संख्या बढ़ाना और आने वाली पीढ़ियों के लिए इस अमूल्य वनौषधीय विरासत को सुरक्षित रखना है।




- 340 औषधीय प्रजातियों का अनूठा संरक्षण, 25 वर्षों की साधना का परिणाम।
- बस्तर की आदिवासी महिलाओं की जैविक जड़ी-बूटियों को अंतरराष्ट्रीय ब्रांड बनाने की पहल।
- तेलिया कंद, हिरनतूतिया सहित कई दुर्लभ वनौषधियां विलुप्ति के कगार पर।
- पांच एकड़ में विकसित मां दंतेश्वरी एथनिक हर्बल गार्डन, वनौषधियों की प्राकृतिक विरासत का संरक्षक।
- धनतेरस पर दुर्लभ वनौषधियों को बचाने और आयुर्वेद की विरासत संजोने की सामूहिक शपथ।

### विलुप्त होती वनौषधियों को बचाने का संकल्प

समारोह के दौरान बस्तर की अनेक दुर्लभ और विलुप्तप्राय जड़ी-बूटियों के संरक्षण पर विशेष चर्चा हुई। बताया गया कि बस्तर के जंगलों में पाई जाने वाली तेलिया कंद, हिरनतूतिया, मंजूर गोड़ी, रसना जड़ी और कुरवां जड़ी जैसी महत्वपूर्ण औषधीय वनस्पतियां अनियंत्रित एवं अंधाधुंध दोहन के कारण आज विलुप्तप्राय स्थिति में पहुंच गई हैं।

इस अवसर पर उपस्थित सभी सदस्यों को इन दुर्लभ वनौषधियों की रक्षा, उनके प्राकृतिक आवास के संरक्षण तथा उनके संवर्धन की शपथ दिलाई गई। सभी ने संकल्प लिया कि आयुर्वेद की इस प्राकृतिक विरासत को बचाने के लिए सामूहिक प्रयास किए जाएंगे तथा स्थानीय समुदायों को भी इस अभियान से जोड़ा जाएगा। कार्यक्रम में मां दंतेश्वरी हर्बल समूह की अध्यक्ष जसमती नेताम, संपदा समाजसेवी संस्थान की महासचिव शिप्रा त्रिपाठी, मां दंतेश्वरी हर्बल प्रोडक्ट्स के डायरेक्टर अनुराग कुमार, एमडी बोटैनिकल्स के सीईओ केविन कुमार तथा मिशन लीडर कृष्णा नेताम सहित बलई चक्रवर्ती, शंकर नाग, लालाराम नेताम और गोलू बघेल सहित अनेक गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे।



कार्यक्रम का मूल संदेश यही रहा कि आयुर्वेद की रक्षा केवल ग्रंथों, औषधियों और चिकित्सा संस्थानों तक सीमित नहीं है। इसके लिए उन जंगलों, जैव विविधता और आदिवासी समुदायों के पारंपरिक ज्ञान को बचाना भी उतना ही आवश्यक है, जिनकी गोद में हजारों वर्षों से भारत की वनौषधीय चिकित्सा परंपरा सुरक्षित रही है।

'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः' अर्थात सभी सुखी हों, सभी निरोग हों, भगवान धन्वंतरि के इस आदर्श को साकार करने के लिए प्रकृति और उसकी औषधीय संपदा की रक्षा ही सच्ची आराधना है।

### आयुर्वेद विश्व परिषद का ऐतिहासिक महत्व

आयुर्वेद के विकास और उसके माध्यम से जनकल्याण के व्यापक उद्देश्य से स्थापित आयुर्वेद विश्व परिषद के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए डॉ. त्रिपाठी ने बताया कि इस संस्था की स्थापना 12 जनवरी 1952 को आचार्य डॉ. प्रभाकर मिश्र (1008 शंकराचार्य प्रभानंद सरस्वती), तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री श्री के.एम. मुंशी तथा भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद के सहयोग और मार्गदर्शन में की गई थी। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी शिक्षा पद्धति के विस्तार तथा एलोपैथिक चिकित्सा प्रणाली को मिले व्यापक संस्थागत प्रोत्साहन के कारण आयुर्वेद को लंबे समय तक अपेक्षित संरक्षण, संवर्धन और विकास के अवसर नहीं मिल सके। इसके बावजूद आयुर्वेद की वैज्ञानिक एवं पारंपरिक विरासत आज भी प्रासंगिक है।

आज दुनिया आयुर्वेद को केवल एक पारंपरिक चिकित्सा पद्धति के रूप में नहीं, बल्कि जीवन को समग्रता से समझने वाली जीवन विद्या के रूप में देखने लगी है। अमेरिका सहित अनेक विकसित देशों में भी चिकित्सा शिक्षा और शोध के क्षेत्र में आयुर्वेद तथा पारंपरिक भारतीय चिकित्सा ज्ञान के प्रति रुचि और स्वीकार्यता बढ़ रही है। यह भारत की प्राचीन चिकित्सा परंपरा के लिए गौरव का विषय है।

डॉ. त्रिपाठी ने बताया कि आयुर्वेद विश्व परिषद के परमाध्यक्ष एवं मार्गदर्शक धन्वंतरि अखाड़े के प्रमुख आचार्य उदय मिश्र जी हैं, जिनके मार्गदर्शन में संस्था आयुर्वेद के प्रचार-प्रसार, संरक्षण और जनकल्याण के उद्देश्यों को आगे बढ़ा रही है।

# धनतेरस पर ACE ट्रैक्टर्स की देशभर में धूम, 201 से अधिक ट्रैक्टरों की डिलीवरी





**फरीदाबाद।** धनतेरस के शुभ अवसर पर ACE (एक्शन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट लिमिटेड) ट्रैक्टर्स ने देशभर में शानदार प्रदर्शन करते हुए 201 से अधिक ट्रैक्टरों की डिलीवरी की। इनमें उत्तर प्रदेश में 76 और मध्य प्रदेश में 56 ट्रैक्टर किसानों को वितरित किए गए। इसके अलावा राजस्थान, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा और बिहार सहित विभिन्न राज्यों में भी किसानों ने धनतेरस के शुभ मुहूर्त पर ACE ट्रैक्टर्स की खरीदारी की।

उत्तर प्रदेश में कुल 76 ट्रैक्टरों की डिलीवरी हुई। इनमें रायबरेली के दौदनगर में 21 और लालगंज में 9 ट्रैक्टर वितरित किए गए। वहीं, उन्नाव के बांगरमऊ सहित प्रदेश की अन्य डीलरशिप पर भी अच्छी डिलीवरी दर्ज की गई। मध्य प्रदेश में भी कंपनी ने बेहतर प्रदर्शन करते हुए 56 ट्रैक्टर किसानों तक पहुंचाए। इनमें बरेली, सिंगरौली, अनूपपुर और बैतूल सहित विभिन्न क्षेत्रों के किसान शामिल रहे। इस दौरान जोनल हेड मनोज गर्ग, सर्विस प्रमुख उमेश यादव तथा एरिया मैनेजर अविनाश दुबे और प्रशांत अग्रवाल ने विभिन्न स्थानों पर पहुंचकर डिलीवरी कार्यक्रमों में सहयोग किया और किसानों को शुभकामनाएं दीं। इस बड़े डिलीवरी अभियान की योजना और प्रबंधन में एग्री बिजनेस यूनिट के बिजनेस हेड रविंद्र सिंह खनेजा और फिलिप वर्गीज़ की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उनके मार्गदर्शन में देशभर की डीलरशिप पर ट्रैक्टरों की उपलब्धता, पूर्व तैयारी, डिलीवरी की योजना और विभिन्न टीमों के बीच समन्वय सुनिश्चित किया गया। इसके परिणामस्वरूप धनतेरस के अवसर पर एक साथ बड़े स्तर पर ट्रैक्टरों की डिलीवरी संभव हो सकी।

इस अभियान में कंपनी के जोनल हेड मनोज गर्ग तथा स्टेट हेड शक्तिनाथ तिवारी, विशाल सिंह, मोहित त्यागी, मनोज दीक्षित, जुगल किशोर पांडेय, अमित भाविक और अब्दुल नासिर सहित सेल्स एवं सर्विस टीम के अधिकारियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। विभिन्न राज्यों में कंपनी के सेल्स ऑफिसर्स और डीलर नेटवर्क ने भी ग्राहकों तक समय पर ट्रैक्टर पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभाई।

किसानों को आसान और त्वरित फाइनेंस सुविधा उपलब्ध कराने में HDFC बैंक, चोला फाइनेंस, श्रीराम फाइनेंस और ICICI बैंक के अधिकारियों का भी विशेष सहयोग रहा। इन वित्तीय संस्थानों की मदद से किसानों को समय पर ऋण स्वीकृति और ट्रैक्टर खरीदने में सुविधा मिली।

ACE ट्रैक्टर्स की इस उपलब्धि ने किसानों के बीच कंपनी के प्रति बढ़ते विश्वास को दर्शाया है। वरिष्ठ नेतृत्व, सेल्स एवं सर्विस टीम, डीलर नेटवर्क और फाइनेंस पार्टनर्स के संयुक्त प्रयासों से धनतेरस का यह डिलीवरी अभियान सफल रहा।

## गेहूं की फसल में बेहतर अंकुरण के लिए KRSS के उपयोग की सलाह




**इंदौर।** गेहूं की बुवाई के मौसम में अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए बीजों का बेहतर एवं समान अंकुरण महत्वपूर्ण है। इसी उद्देश्य से कृषि रसायन ने KRSS उत्पाद प्रस्तुत किया है। कंपनी के अनुसार यह उत्पाद बीजों के समान जमाव और फसल की शुरुआती स्थापना में सहायक है।

KRSS उत्पाद बीजों के बेहतर अंकुरण में सहायक होता है। फसल में समान जमाव सुनिश्चित करने में उपयोगी और शुरुआती फसल स्थापना में सहायक होता है। यह उत्पाद गेहूं की बुवाई के समय उपयोग के लिए उपयुक्त है। बीज उपचार के लिए चक्रस्स की 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपयोग करने की सलाह दी गई है। कंपनी के अनुसार सीड ड्रिल से बुवाई के दौरान भी इसका उपयोग किया जा सकता है। कंपनी ने सलाह दी है कि बीज उपचार करते समय दस्ताने पहनें और उत्पाद को बीजों पर समान रूप से मिलाएं। उपयोग से पहले उत्पाद के लेबल पर दिए गए निर्देशों एवं सावधानियों का पालन करें।

## आंध्र प्रदेश में 12.7 लाख टन वार्षिक क्षमता का यूरिया संयंत्र लगाने की तैयारी, कृभको गेल ने किया समझौता



**विशाखापत्तनम।** भारत को उर्वरक उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए कृषक भारती सहकारी लिमिटेड (कृभको) और गैस अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (गेल) ने आंध्र प्रदेश में गैस आधारित यूरिया संयंत्र की स्थापना की संभावनाओं का पता लगाने के लिए आंध्र प्रदेश आर्थिक विकास बोर्ड (एपीईडीबी) के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

इस समझौता ज्ञापन पर 31वें भारतीय उद्योग परिसंघ साझेदारी शिखर सम्मेलन 2026 के दौरान आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री एन. चंद्रबाबू नायडू की गरिमामयी उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए। प्रस्तावित यूरिया संयंत्र की वार्षिक उत्पादन क्षमता 12.7 लाख मीट्रिक टन निर्धारित की गई है। इसे आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम जिले के मुलापेटा में गेल की श्रीकाकुलम-अंगुल प्राकृतिक गैस पाइपलाइन (एसएपीएल) के नजदीक स्थापित करने का प्रस्ताव है।

समझौता ज्ञापन पर कृभको के कार्यकारी निदेशक (तकनीकी) श्री सी. एस. आजाद, गेल के कार्यकारी निदेशक (व्यवसाय विकास, नव उद्यम एवं अनुसंधान और विकास) श्री संजय अग्रवाल तथा आंध्र प्रदेश आर्थिक विकास बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री सगिली शन मोहन (आईएएस) ने हस्ताक्षर किए।

इस अवसर पर कृभको के अध्यक्ष श्री वी. सुधाकर चौधरी, प्रबंध निदेशक श्री एस. एस. यादव तथा गेल के निदेशक (व्यवसाय विकास) श्री आर. के. सिंघल भी उपस्थित रहे।

इस प्रस्तावित परियोजना का उद्देश्य उर्वरक उत्पादन के क्षेत्र में कृभको के अनुभव, प्राकृतिक गैस के क्षेत्र में गेल की विशेषज्ञता और आंध्र प्रदेश में निवेश को प्रोत्साहित करने तथा सुविधाएं उपलब्ध कराने में आंध्र प्रदेश आर्थिक विकास बोर्ड की भूमिका को एक साथ लाना है।

कृभको के लिए यह समझौता देश में यूरिया उत्पादन की अतिरिक्त क्षमता विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इससे भविष्य में देश की कृषि संबंधी उर्वरक आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता मिलेगी और यूरिया की उपलब्धता को मजबूत किया जा सकेगा।

यह समझौता संबंधित पक्षों को प्रस्तावित परियोजना की तकनीकी, आर्थिक और अन्य संभावनाओं का विस्तृत अध्ययन करने के लिए एक रूपरेखा उपलब्ध कराएगा। इसके माध्यम से परियोजना की व्यवहार्यता का पता लगाया जाएगा। इस पहल का व्यापक उद्देश्य देश में उर्वरकों की उपलब्धता बढ़ाना, आयात पर निर्भरता कम करने की दिशा में सहयोग देना तथा आंध्र प्रदेश के औद्योगिक विकास और निवेश को प्रोत्साहित करना है।

## कृषि अधिकारियों को इफको के नवाचारों और नई तकनीकों का दिया प्रशिक्षण



**शिवपुरी।** कृषि विज्ञान केंद्र शिवपुरी में इफको की ओर से कृषि, किसान और सहकारिता से जुड़े विषयों पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें जिले के कृषि अधिकारियों और मैदानी अमले को इफको के नवीन उत्पादों, उन्नत उर्वरकों और किसानों के हित में संचालित योजनाओं की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में जिले के विभिन्न ब्लॉकों से आए करीब 40 विभागीय अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में इफको भोपाल के राज्य विपणन प्रबंधक श्री आर.के.एस. राठौड़ और इफको किसान फाइनेंस दिल्ली के श्री अभिषेक कुमार मौजूद रहे। वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में उप संचालक कृषि श्री मुनेश कुमार शाक्य, कृषि विज्ञान केंद्र शिवपुरी के प्रमुख डॉ. पुनीत कुमार राठौर और वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. मुकेश कुमार भार्गव शामिल हुए। इसके अलावा सभी ब्लॉकों के वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी और आत्मा प्रभारी भी उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण के दौरान श्री आर.के.एस. राठौड़ ने इफको के नवाचार उत्पादों, विशेष उर्वरकों और किसानों के लिए संचालित संकट हरण बीमा योजना की जानकारी दी। डॉ. पुनीत कुमार राठौर ने किसानों के विकास के लिए संचालित विभिन्न कार्यक्रमों और मृदा स्वास्थ्य के महत्व पर प्रकाश डाला। वहीं डॉ. मुकेश कुमार भार्गव ने पराली मुक्त मध्यप्रदेश अभियान के तहत जिले में किए जा रहे कार्यों की जानकारी साझा की।

उप संचालक कृषि श्री मुनेश कुमार शाक्य ने जिले में टोकन प्रणाली के माध्यम से खाद वितरण की व्यवस्था, पराली प्रबंधन तथा बायो-डिकम्पोजर और बायो-फर्टिलाइजर के उपयोग के बारे में बताया। उन्होंने मैदानी अमले से कहा कि वे नैनो यूरिया और नैनो डीएपी के लाभ किसानों तक पहुंचाएं, जिससे रासायनिक उर्वरकों के संतुलित उपयोग को बढ़ावा मिल सके। कार्यक्रम का समापन इफको प्रतिनिधि श्री हरेराम बिरले के संबोधन और आभार प्रदर्शन के साथ हुआ। इस अवसर पर इफको की पूरी फील्ड टीम भी मौजूद रही। प्रशिक्षण का उद्देश्य कृषि विभाग के मैदानी अमले को आधुनिक कृषि तकनीकों और उन्नत उत्पादों की जानकारी देकर किसानों तक इनका लाभ पहुंचाने के लिए तैयार करना रहा।

● पुष्पेन्द्र कोली ● अनूप कुमार
● पूजा तंबोली ● सोनू कुमार महावर
● कृष्ण कुंवर सिंह
भा.कृ.अ.प.- भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी (उ.प्र.)



# पशु आहार में औषधीय एवं सुगंधीय पादपों का समावेशः एक नवाचार

**मनुष्य के जीवन में प्राचीन काल से ही मवेशियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आज भोजन की इस बढ़ती मांग को अगर देखा जायें तो पशुओं का महत्व किसी भी प्रकार से नकारा नहीं जा सकता। मवेशियों से हमें दुग्ध और मांस दोनों ही प्राप्त होते हैं। इसलिए इन मवेशियों के खानपान पर ध्यान देना उतना ही जरुरी है जितना कि एक मनुष्य के खान पान के लिए दिया जाता है।**

वास्तविक रूप से देखा जाये तो पुराने समय से ही जड़ी-बूटियों का उपयोग प्राय: हमारे पूर्वज दवाइयों के रूप में भली-भांति करते आये हैं। निश्चित तौर पर ये जड़ी-बूटियां मनुष्य और जानवरों के स्वास्थ को संतुलित बनाए रखती हैं। हाल ही में भोजन विज्ञान से सम्बंधित एक शब्द उभर कर आया है जिसे न्यूटरास्युटिकल्स के नाम से जाना जाता है। इसका मतलब है एक दवा के रूप में इस्तेमाल खाद्य पदार्थ अथवा एक ऐसा भोजन या पोषक तत्व जिसमे रोगनाशक गुण हो। आजकल बाजार में भी व्यवसायिक रूप से बहुत से पौष्टिक आहार और उर्जिय पेय पदार्थ उपलब्ध है जो की न्यूटरास्युटिकल्स पर आधारित है। यह संकल्पना मनुष्य के पौष्टिक आहार में अच्छी तरह से प्रचलित हो रही हैं, तो क्यों ना हमारा ध्यान पशुओं कि तरफ जायें जिनका हमारे जीवन में बहुत बड़ा महत्व है।

### औषधीय एवं संगधीय पादपों का महत्व

आहार ही पहली औषधी है। यह बात बहुत समय पहले एक महान चिकित्सक हिप्पोक्रेट्स ने 377 ई.पू. में कही थी। पशुओं और मनुष्य के विभिन्न रोगों के उपचार हेतु वर्षों से औषधीय पौधों और जड़ी-बूटियों का इस्तेमाल किया गया हैं। किसानों द्वारा हर्बल दवाओं का उपयोग पशुओं की चिकित्सा में भी खूब लिया जाता रहा हैं। कुछ वैज्ञानिकों ने शोध कर पौधों से निकले गये सक्रिय तत्वों का परिक्षण कर उनके गुणों के बारे में बताया है। जो की विभिन्न प्रकार के उपचार हेतु काम में लिए जाते है जैसे कि पाचन उत्तेजक, दस्त विरोधी, विषाक्तनाशी, रोगनाशी, कीटनाशी, दुग्धपान बढ़ाने में इत्यादि। उनमें अक्सर इस्तेमाल किये जाने वाले निम्लिखित पौधे हैं-

- **संगधिय पौधे**- जायफल, दालचीनी, लौंग, इलायची, धनिया, जीरा, मोटी सौंफ, अजवायन, अजमोद, मैंथी इत्यादि।
- **तीखी प्रजातियां**- शिमला मिर्च, कालीमिर्च, सहजिन, सरसों एवं अदरक इत्यादि।
- **खुशबुदार जड़ी बूटियां और मसाले**- रोजमैरी, अजवायन के फूल, ऋषि, पुदीना, नीम इत्यादि।

### चारे में उपयोग

कुछ ऐसी ही पादपों की प्रजातियां हैं जिन्हें अगर पशुओं के चारे में नियमित और उचित मात्रा में मिलाया जाएं तो न केवल दुग्ध उत्पादन बल्कि इसके साथ-साथ दुग्ध की गुणवत्ता में भी बढ़ोतरी पाई गई है। दुग्धपान को बढ़ाने वाले पौधे हैं जैसे कि जीवन्ति या डोरी (लेप्टाडेनिया रेटिकुलेटा), सतावर (एस्पेरेगस रेसिमोसस), कलौंजी या काला जीरा (निगेला सटिवा) एवं असालिओं (लेपीडियम सटाइवम) इत्यादि। गुजरात के नवसारी कृषि विश्वविद्यालय में हुए शोध में पाया गया कि एक पॉली हर्बल गलक्टोस मिश्रण, जो कि पूरी तरह से मध्य प्रदेश, गुजरात एवं राजस्थान के सीमावर्ती स्थानीय जनजातियों के स्वदेशी ज्ञान पर आधारित हैं। पॉली हर्बल गलक्टोस मिश्रण निम्नलिखित पादपों के तत्वों से बनाया गया हैं। खैर, देशी बबूल, सप्तपर्ण, दिल, सतावरी, धनिया, जीरा, सौंफ, असालिओं, जीवन्ति या डोरी, महुआ, विदारी कंद, गन्ना, तिल, सरफोंक, गिलोय। हर्बल जड़ी-बूटियों से बना यह मिश्रण मनुष्य के दुग्ध उत्पादन में भी बहुत वृद्धि कारक है। शोध में देखा गया कि इस मिश्रण की दो-दो बिस्कुट सुबह-शाम नियमित ढंग से चारे के साथ सुरती भैंस को खिलाने से दुग्ध में वृद्धि के साथ ही भैंस के स्वास्थ्य में भी लाभकारी होता है।

**हर्बल पौधों के सक्रिय तत्व और उनके कई औषधीय गुण**

| नाम | उपयोगी अंश | सक्रिय पदार्थ | औषधीय गुण |
|---|---|---|---|
| सुगंधित प्रजाति | | | |
| जायफल | बीज | सबिनेन | पाचन उत्तेजक, दस्त निरोधी |
| दालचीनी | छाल | अम्मामेल्डिहाइड | भूख और पाचन उत्तेजक, रोगाणुरोधक |
| लौंग | फूल | यूजेनॉल | भूख और पाचन उत्तेजक, रोगाणुरोधक |
| इलायची | बीज | चिनूक | भूख और पाचन उत्तेजक |
| धनिया | पत्ते | उनालोल | भूख उत्तेजक |
| जीरा | बीज | क्युमिनल्डिहाइड | पचानेवाला और दुग्ध वर्धक |
| मोटी सौंफ | फल | एनेथोल | पाचन उत्तेजक और दुग्ध वर्धक |
| अजवायन | फल, पत्ते | फ्तालीडेस | भूख और पाचन उत्तेजक |
| अजमोद | पत्ते | अपियोल | भूख और पाचन उत्तेजकए रोगाणुरोधक |
| मैंथी | बीज | ट्राइगोनेलिन | भूख उत्तेजक |
| तीखी प्रजातियां | | | |
| शिमला मिर्च | फल | कैप्सैसिन | दस्त निरोधी, सूजनरोधी, शक्ति वर्धक |
| कालीमिर्च | फल | पिपेरिन | पाचन उत्तेजक |
| सहजिन | जड़ | एलिल आइसो थायोसायनाट | भूख उत्तेजक |
| सरसो | बीज | एलिल आइसो थायोसायनाट | पाचन उत्तेजक |
| अदरक | राइजोम | जिंजरॉल | पाचन उत्तेजक |
| खुशबूदार जड़ी-बूटियां और मसाले | | | |
| रोजमैरी | पत्ते | सिनिओल | पाचन उत्तेजक, रोगाणुरोधक, ऑक्सीकरणरोधी |
| अजवायन के फूल | पूरा का पूरा पौधा | थयमोल | पाचन उत्तेजक, रोगाणुरोधक, ऑक्सीकरणरोधी |
| ऋषि | पत्ते | सिनिओल | पाचन उत्तेजक, रोगाणुरोधक, ताप वर्धक |
| पुदीना | पत्ते | मेंथोल | भूख और पाचन उत्तेजक, रोगाणुरोधक |
| नीम | पत्ते, छाल, बीज | अजाडीरेक्टिन, सलानिनए नुम्बिनए मेलिएन्ट्रियल | एंटीवायरल, एंटीसेप्टिक, कवकनाशी |

स्रोतः चेरिस (2000)

### औषधीय एवं संगधीय पादपों के फायदे

#### सूक्ष्मजीव रोधी गतिविधि

कुछ औषधीय पादपो में सूक्ष्मजीव रोधी गुण होता हैं। पशुओं को नीम की पत्तियां खिलाने से सूक्ष्मजीव जैसे- स्ट्रेप्टोकोकस, इसेरेसिया आदि की वृद्धि रूक जाती हैं। सूक्ष्मजीव के साथ-साथ नीम की पत्तियां फफूंद जैसी बीमारियों से लड़ने में भी पशुओं के अंदर क्षमता प्रदान करती हैं। दौना (ओरिगेनम वेल्गारे) पौधे में लगभग 30 सूक्ष्मरोधी रसायन पाए जाते हैं।

#### एंटीऑक्सीडेंट गुण

एंटीऑक्सीडेंट गुण बहूत सारे पोधो में फ्लावोनोइड्स एवं फेनॉलिक अम्ल के कारण होता है। कुछ पौधे जैसे कि दालचीनी, तुलसी, लवंग एवं अन्य आयुर्वेदिक पौधे हैं।

#### एंटी कैंसर गतिविधि या कर्क रोग रोधी

तुलसी की पत्तियों से कर्क रोग रोधी दवाइयां तैयार करने की प्रक्रिया भी जारी हैं। शोध के दौरान देखा गया कि तुलसी की पत्तियों से निकाले गए अर्क में सक्रिय तत्व आनुवांशिकी परिवर्तनों को रोकने में बहुत ही सहायक हैं।

#### पीड़ाहर और ज्वरनाशक गतिविधि

बहुत सारे पौधों में पीड़ाहारक एवं ज्वरनाशक गतिवधियां पायी जाती हैं उनमें प्रमुख हैं तुलसी, वैनिला, वेरवेना, हनुमान फल, इमली, कद्दू, लिंडेन, कॉफी के पत्ते, अदरक, फालसा, गुड़हल, यूकेलिप्टस एवं पुदीना आदि।

#### कीटनाशी गुण

नीम की पत्तियों में टेट्रा नोर ट्राईटेरपेनॉइड्स ग्रुप का एक आजातिरेक्टिन नामक रसायन होता हैं जो की कीटनाशक तथा अन्य फायदेमंद गुण से भरा होता है। निम्बू, यूकेलिप्टस, प्याज, लहसून एवं गुलदाउदी के फूल में भी कीटनाशक क्षमता पायी जाती है।

#### अन्त: परजीविनाशक गुण

नीम पत्तियां, चित्रा/दारू हल्द, विडिंग, वशा बेच आदि पौधों से आयुर्वेदिक अन्त: परजिवीनाशक ओषधियां बनाई जाती हैं। ये दवाइयां पशुओं के पेट में होने वाले कोक्सीडिया नामक अन्त: परजीव का नाश करते हैं।

**निष्कर्ष :** पौष्टिक पशु उत्पादों को प्राप्त करने के लिए पशुओं को स्वस्थ रखना आवश्यक है। लगभग पिछले दशक से मनुष्य एवं पशुओं के पोषण में प्राकृतिक योग को भी बहुत ही प्रोत्साहित किया गया है। विभिन्न तरह के प्राकृतिक योग जैसे की प्रोबियोटिक्स, प्रेबियोटिक्स, कार्बनिक अम्ल और पौधों के सक्रिय तत्व, उनके जैव रसायन, सरंचनाएं एवं शारीरिक कार्यों पर भी शोध केंद्रित किया गया है। अगर मवेशियों के चारे में औषधीय एवं संगधीय पादपों को पूरक भोजन के रूप में सम्मलित किया जायें जैसे कि सूखे पौधे, उनके कुछ हिस्से या अर्क के रूप में खिलाया जाये तो निश्चित ही किसान को दुग्ध उत्पादन एवं उसकी गुणवत्ता में इजाफा मिलेगा। औषधीय जड़ी-बूटियां पशुओं में पाचनशक्ति, रोगाणुरोधी, एंटी माइक्रोबियल, एंटी ऑक्सीडेंट, विषाक्तनाशी, कीटनाशी और प्रतिरक्षी उद्दीपक के सुधार में बहुत ही प्रभावशाली है। इसी के साथ-साथ किसान, उसका पूरा परिवार एवं उसके पशु भी स्वस्थ रहेंगे और निश्चित तौर पर किसानों के लिए पशुपालन एक अच्छी आमदनी का स्रोत भी बरकरार रहेगा।

● डॉ. मृगेन्द्र सिंह
● डॉ. बी.के. प्रजापति
● श्री दीपक चौहान
● श्री भागवत प्रसाद पेन्द्रे
● श्री गुरूप्रीत गांधी
कृषि विज्ञान केन्द्र, शहडोल (म.प्र.)



# मक्का की पौष्टिक गुणवत्ता का महत्व

**भारत के कई हिस्सों में मुख्यतः मध्य प्रदेश, पंजाब, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, हरियाणा, जम्मू-काश्मीर, गुजरात, कर्नाटक एवं आन्ध्र प्रदेश में मक्का की खेती की जाती है। मक्का पोएसी कुल का है।**

मक्के को अंग्रेजी में मेज कहते हैं। भारत में मक्का को विभिन्न नामों से पुकारा जाता है जैसे- मक्का, मकई, भुट्टा। मक्का जिसे आमतौर पर स्वीट कार्न, मकई का तेल, पॉपकार्न, मकई फ्लैक्स आदि रुपों में उपभोग किया जाता हैं। बरसात के समय भूने भुट्टा या मक्के का मजा सब लेते हैं पर इसके फायदों के बारे में कम ही लोगों को जानकारी होती है। आयुर्वेद में मक्का के औषधीय गुणों के आधार पर विभिन्न बीमारियों के उपचार में उपयोग किया जाता हैं। आयुर्वेद में मक्के के दाने और वर्त्तिका (बत्ती) का प्रयोग औषधि के लिए सबसे ज्यादा किया जाता है। इसके कई स्वास्थ्य लाभ हैं।

**मक्का का पोषण मूल्य:** मक्का में सेलेनियम जैसे दुर्लभ खनिज लवण पाया जाता है। यह फाइबर का भी समृद्ध स्रोत है। 100 ग्राम मकई में 365 कैलोरी पाई जाती है। 100 ग्राम मकई में 74 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 9 ग्राम प्रोटीन, 4.7 ग्राम वसा, शून्य कोलोस्ट्रोल, 37 मिलीग्राम सोडियम और 287 मिलीग्राम पोटेशियम होता है। इसमें बी, सी और ई जैसे महत्वपूर्ण विटामिन शामिल हैं। साथ ही सेलेनियम, फॉस्फोरस, लौह, मैंगनीज, फोलिक एसिड और मैग्नीशियम जैसे खनिज लवण भी मौजूद हैं। भी मौजूद हैं। मक्का बहुत ही पौष्टिक होता है। भुट्टे के कोमल बाल दर्द कम करने वाला और मूत्र को बढ़ाने वाला होता है। इसके अलावा सूजाक या गोनोरिया, सूजन और पथरी में इसका काढ़ा बनाकर पीने से लाभ मिलता है। मक्का प्रकृति से खाकर मन संतुष्ट करने वाला, पित्त का स्राव बढ़ाने वाला, मूत्र बढ़ाने वाला, पोषक, शक्ति बढ़ाने वाला, खाने की इच्छा बढ़ाने वाला, बलवर्धक, कफ और पित्त कम करने वाला होता है। कच्चा मक्का पुष्टिकारक तथा रुचिकारक होता है। मक्का हृदय की पेशियों को उत्तेजित करता है, रक्तचाप बढ़ाता है, मूत्र संबंधी बीमारियों में औषधियों की तरह काम करता है एवं पाचन तंत्र को बेहतर करता है। मक्के की रेशमी वर्तिका या बत्ती-स्तम्भक, मूत्र कम होने पर बढ़ाने में मदद करती है। इसके बीज विलायक, शोथ या सूजन तथा दर्द को कम करने वाला व स्तम्भक होते हैं।

## मक्का का स्वास्थ्य लाभ

- मक्का में मौजूद जिंक, फॉस्फोरस, मैग्नीशियम और आयरन होता जो हमारे शरीर की हड्डियों को मजबूत बनाता है।
- मक्के में विटामिन सी, बायोफ्लेविनॉइड्स, कैरोटेनॉइड और फाइबर भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। मक्का हमारी धमनियों को ब्लॉक होने से रोकता है और कॉलेस्ट्रॉल का कम करता है। इसमें मौजूद फाइबर कॉलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करने में सहायक है।
- मक्का का सेवन हमारी त्वचा को खूबसूरत बनाता है। मक्का में विटामिन ए और सी अच्छी मात्रा में पाया जाता है। इसके साथ ही ऐंटी-ऑक्सिडेंट फ्री रेडिकल से बचाव कर चेहरे को झुर्रियों से मुक्त रखता है।
- मक्का का सेवन करने से एनर्जी मिलती है। इसमें भरपूर मात्रा में कार्बोहाइड्रेट होता है, जो शरीर में ऊर्जा का संचार करता है।
- मक्के में आयरन भरपूर मात्रा में पाया जाता है जो कि हमारे शरीर में आयरन की समस्या को दूर करता है। इसका सेवन से हम एनीमिया से बच सकते है। मक्का के अंदर विटामिन बी 9 और फोलिक एसिड होता है, जो कि गर्भवती महिलाओं को लिए बहुत फायदेमंद होता है।
- मक्के में पाए जाने वाले ऐंटी-ऑक्सिडेंट्स और फ्लेवेनॉइड तत्वों पाए जाते है जो कि कैंसर जैसी खतरनाक बीमारी के खतरे को कम करता है।
- मौसम के बदलाव के कारण खांसी में भुने मक्के का सेवन करने से राहत मिलती है।
- डिप्थीरिया से राहत दिलाने में भुट्टा का सेवन बहुत ही फायदेमंद होता है।
- मसालेदार, तीखा खाने इत्यादि से पाइल्स या बवासीर के बीमारी होती है। बवासीर में मक्का का घरेलू उपाय बहुत ही फायदेमंद होता है। इसमें मक्के के दानों का काढ़ा बनाकर, कमर से स्नान करने से लाभ मिलता है।
- लीवर की बीमारी में मक्का का सेवन बहुत फायदेमंद होता है। मक्के की वर्तिका (बत्ती) को पीसकर सेवन करने से यकृत तथा पाचन संबंधी बीमारी में लाभ होता है।
- मक्के के बीजों तथा मक्के की रेशमी वर्त्तिका से बने विविध योगों का सेवन करने से गुर्दे या किडनी की सूजन, मूत्राशय में सूजन तथा मूत्र संबंधी बीमारी से जल्दी राहत मिलती है।
- प्रदूषित खान-पान के कारण किडनी में पथरी होने का खतरा दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। मक्के की भस्म (65 मिग्रा) को (1 गिलास) जल में घोलकर सेवन करने से वृक्क (किडनी) एवं मूत्राशयगत अश्मरी (पथरी)में लाभ होता है।
- मक्के की वर्तिका का काढ़ा बनाकर 10-20 मिली मात्रा में सेवन करने से मूत्राशय संबंधी बीमारी से राहत मिलती है। मक्के का काढ़ा बनाकर 15-20 मिली मात्रा में सेवन करने से मूत्रदाह तथा मूत्रत्याग के समय होने वाले दर्द से राहत मिलती है।
- टी.बी के कष्ट से राहत दिलाने में मक्का बहुत काम करता है। मक्कों के दानों से बने विविध प्रकार के भक्ष्य का सेवन करने से टी.बी. व रात को बिस्तर पर पेशाब करने की बीमारी में लाभ होता है।
- अगर हद से ज्यादा ब्लीडिंग हो रहा है तो मक्के का सेवन बहुत लाभकारी होता है। सूखे वर्तिका से बने भस्म को रक्तस्राव वाले स्थान पर रखने से रक्त रुक जाता है।
- अगर लंबी बीमारी के कारण या पौष्टिकता की कमी के वजह से कमजोरी महसूस हो रही है तो मक्का का सेवन करने से लाभ मिलता है। मक्के को भूनकर या मक्के के विभिन्न भक्ष्य बनाकर सेवन करने से कमजोरी दूर होने के साथ-साथ तथा शरीर पुष्ट होता है।
- प्रोटीन की कमी से सूखा रोग में मक्के का सेवन लाभकारी होता है।

## मक्के के पौष्टिक आहार

**पौष्टिक लड्डू : सामग्री**-मक्का आटा-100 ग्राम, चना बेसन-50 ग्राम, मूंगफली-50 ग्राम, तिल 50 ग्राम, घी या तेल-85 ग्राम, शक्कर- 100 ग्राम। **विधि:** मक्का आटा, बेसन को अलग-अलग सुनहरा भूरा रंग होने तक घी में भून लें। मूंगफली को भूनकर छिलका निकाल लें। तिल को भून लें। फिर सारी सामग्री को मिलाकर इसमें पिसी शक्कर मिलाकर लड्डू बांध लें।

**अनुपूरक आहार/अनुपूरक आटा : सामग्री**- मक्का आटा- 45 ग्राम, चना आटा-20 ग्राम, स्कीम दूध पाउडर- 25 ग्राम, शक्कर-15 ग्राम, घी-5 ग्राम। **विधि:** मक्का आटा और चना आटा को अच्छी तरह भून लें। फिर इसमें दूध पाउडर, घी, शक्कर मिला लें।

(शेष पृष्ठ 12 पर)



# चने में संतुलित खाद प्रबंधन की दी जानकारी

**धार।** कृषि विज्ञान केन्द्र, धार द्वारा समूह दलहन अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन परियोजना के तहत चने की फसल में समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन पर दो दिवसीय कृषक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.एस. चौहान के मार्गदर्शन में हुए प्रशिक्षण में नालछा एवं तिरला विकासखंड के 50 किसानों ने भाग लिया।



प्रशिक्षण में डॉ. एस.एस. चौहान ने बताया कि धार जिला रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग वाले देश के 100 जिलों में शामिल है। किसानों को मिट्टी परीक्षण के आधार पर नत्रजन, स्फुर एवं पोटाश का संतुलित उपयोग करना चाहिए। उन्होंने मिट्टी का नमूना लेने की वैज्ञानिक विधि और इसके लाभ बताए।

प्रसार वैज्ञानिक डॉ. अंकिता पाण्डेय ने बीजोपचार, जैविक खाद एवं जैव उर्वरकों के महत्व की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जैव उर्वरक वायुमंडलीय नाइट्रोजन उपलब्ध कराने और मिट्टी में मौजूद अघुलनशील फास्फोरस को घुलनशील बनाने में मदद करते हैं। इससे रासायनिक खादों पर निर्भरता कम होती है।

उद्यानिकी वैज्ञानिक डॉ. डी.एस. मण्डलोई ने जिंक, सल्फर जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों की भूमिका बताते हुए फूल आने और फलियां बनने के समय पर्णीय छिड़काव एवं उचित जल प्रबंधन की जानकारी दी। किसानों को जैविक कीट प्रबंधन के लिए फेरोमोन ट्रैप भी वितरित किए गए। कृषक-वैज्ञानिक संवाद में किसानों की समस्याओं का समाधान किया गया। कार्यक्रम में रीतेश जैन, गौरव सारस्वत, भूपेन्द्र कुर्मी, गणेश निगवाल, जितेंद्र नायक, जीवन निगवाल एवं विशेष नलवाया का सहयोग रहा।

( पृष्ठ 11 का शेष )

**मक्का की पौष्टिक...**

**मक्का की खीर: सामग्री**- मक्का दलिया- 20 ग्राम, दूध - 250 मिली, शक्कर-20 ग्राम, इलायची। **विधि:** दूध उबाल लें। इसमें मक्के की दलिया डाल कर धीमी आंच पर पकायें इसमें इलायची पाउडर व शक्कर मिला दें।

**मक्के की खिचड़ी : सामग्री**- मक्के की दलिया- 50 ग्राम, घी-10 ग्राम, नमक-1 ग्राम, हल्दी पाउडर-1 ग्राम, जीरा-1 चम्मच, पानी-450 मिली., मूंग दाल- 50 ग्राम, हरी मिर्ची-1 ग्राम, धनियां स्वादनुसार। **विधि:** कुकर में तेल गर्म करके इसमें जीर, मिर्च का बघार दें। इसमें दाल, मक्के की दलिया भून लें और हल्दी, नमक, पानी, डालकर पका लें।

**मक्के का मीठे दलिया : सामग्री:** मक्का की दलिया- 50 ग्राम, पानी-200 मिली., दूध-150 मिली. शक्कर-15 ग्राम।

**विधि:** मक्का के दलिया को भूनकर फिर पानी में अच्छी तरह पकायें। इसमें दूध और शक्कर मिलाकर 5 मिनट और पकायें।

**पकोड़ा : सामग्री:** मक्का आटा -100 ग्रम, प्याज-150 ग्राम, लहसुन-5 ग्राम, अदरक-5 ग्राम, मिर्च हरी-5 ग्राम, तेल एवं नमक- जरूरत अनुसार। **विधि:** मक्के के आटे में कटी प्याज, अदरक, मिर्च, लहसुन, और मसाले मिलाकर पानी से घोल बना लें। तेल गर्म होने पर तैयार मिश्रण से पकौड़े बनाकर छान लें।

**मीठे पुए : सामाग्री:** मक्के की आटा- 150 ग्राम, शक्कर- 50 ग्राम, गेहूँ आटा- 50 ग्राम, तेल-तलने के लिये। **विधि:** मक्के का आटा एवं गेहूँ के आटे को मिला लें। इसमें शक्कर डालकर पानी से घोल बना लें। तैयार घोल की एक-एक चम्मच गर्म तेल में डालकर पुए जैसे तल लें।

**मक्के की पूरी : सामग्री:** मक्का आटा-100 ग्राम, गेहूँ आटा-100 ग्राम, चना आटा-100 ग्रम, अजवायन-100 ग्राम, नमक-1 चम्मच, तेल -तलने के लिये।

**विधि:** आटे को छन्नी से छान लें और उसमें नमक अजवायन मिलाकर पूरी का कड़ा आटा गूंद लें। छोटे गोले बनाकर पूरी बेलकर सुनहरे होने तक तल लें।

( पृष्ठ 5 का शेष )

## मटर की उन्नत खेती ..

इसके लिए थीरम 2 ग्राम या मैकोंजेब 3 ग्राम को प्रति किलो बीज शोधन करना चाहिए। इसकी अगेती किस्म की बुवाई करने से 24 घंटे पहले बीज को पानी में भिगोकर रख रखना चाहिए तथा इसके बाद छाया में सुखाकर बुवाई करनी चाहिए। इसकी बुवाई के लिए देशी हल जिसमें पोरा लगा हो या सीड ड्रिल से 30 सेमी की दूरी पर बुआई करनी चाहिए। बीज की गहराई 5-7 सेमी रखनी चाहिए जो मिट्टी की नमी पर निर्भर करती है।

### खाद व उर्वरक

मटर में सामान्यत: 20 किग्राए नाइट्रोजन एवं 60 किग्रा फास्फोरस बुआई के समय देना पर्याप्त होता है। इसके लिए 100-125 किग्रा डाईअमोनियम फास्फेट (डीएपी) प्रति हेक्टेयर दिया जा सकता है। पोटेशियम की कमी वाले क्षेत्रों में 20 किग्रा पोटाश (म्यूरेट ऑफ पोटाश के माध्यम से) दिया जा सकता है। जिन क्षेत्रों में गंधक की कमी हो वहां बुआई के समय गंधक भी देना चाहिए। यदि हो सके तो मिट्टी की जांच अवश्य करा ले ताकि पोषक तत्वों की पूर्ति करने में आसानी हो सके।

### मटर की सिंचाई कब-कब करें



ट्रैक्टर जंक्शन की इस पोस्ट में हम आपको यहां बता रहे हैं कि मटर के पौधे में कितने दिन में पानी दें। मटर की उन्नत खेती में प्रारंभ में मिट्टी में नमी और शीत ऋतु की वर्षा के आधार पर 1-2 सिंचाइयों की आवश्यकता होती है। पहली सिंचाई फूल आने के समय और दूसरी सिंचाई फलियां बनने के समय करनी चाहिए। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हल्की सिंचाई करें और फसल में पानी ठहरा न रहे।

### मटर की फसल के रोग/खरपतवार नियंत्रण

यदि खेत में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार जैसे- बथुआ, सेंजी, कृष्णनील, सतपती अधिक हों तो 4-5 लीटर स्टाम्प-30 (पैंडीमिथेलिन) 600-800 लीटर पानी में प्रति हेक्टेयर की दर से घोलकर बुआई के तुरंत बाद छिड़काव कर देना चाहिए। इससे काफी हद तक खरपतवारों को नियंत्रित किया जा सकता है।

### कटाई और मड़ाई

मटर की फसल सामन्यत: 130-150 दिनों में पकती है। इसकी कटाई दरांती से करनी चाहिए 5-7 दिन धूप में सुखाने के बाद बैलों से मड़ाई करनी चाहिए। साफ दानों को 3-4 दिन धूप में सुखाकर उनको भंडारण पात्रों (बिन) में करना चाहिए। भंडारण के दौरान कीटों से सुरक्षा के लिए एल्युमिनियम फोस्फाइड का उपयोग करना चाहिए।

### उपज प्राप्ति

उत्तम कृषि कार्य प्रबन्धन से लगभग 18-30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की सकती है।

### कितनी हो सकती है कमाई

बाजार में सामान्यत: मटर के भाव 20.40 रुपए प्रति किलो के हिसाब से होते हैं। यदि औसत भाव 30 रुपए प्रति किलो भी लगाए तो एक हेक्टेयर में 70 हजार रुपए तथा इस प्रकार यदि 5 हेक्टेयर में इसकी बुवाई की जाए तो एक बार में 3 लाख 50 हजार रुपए की कमाई की जा सकती है। बता दें कि मटर, गेहूं और जौ के साथ अंत:फसल के रूप में भी बोई जाती है। हरे चारे के रूप में जई और सरसों के साथ इसे बोया जाता है। इस प्रकार आप अन्य फसलों के साथ इसकी बुवाई कर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं।


## वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

**अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-**

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स,
रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास
होशंगाबाद रोड, भोपाल ( म.प्र. )
फोन : ( 0755 ) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875,
9300754675, 9826686078

## सिवनी-मालवा में



कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

**श्री अभिषेक जैन**
**मे. कांति ट्रेडर्स**
**नर्मदापुरम रोड,नए ब्रिज के पास सर्विस रोड बनापुरा, जिला नर्मदापुरम ( म.प्र. )**

## मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स
( कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान )

●औषधीय●वन ●सब्जी●फूल●बीज●स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ●कीटनाशक ●जैविक खाद ● गार्डन टूल ●जैविक उत्पाद ●ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।
**वितरक** - ●निर्मल सीड्स, जलगांव ●कलश सीड्स, जालाना ●अंकुर सीड्स, नागपुर ● वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ●दिनाकर सीड्स, गुजरात ●सटिंड सीड्स, दिल्ली ● फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ●स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ●जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ●स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ●अनु प्रोडक्ट्स लि. ●श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

# जल संरक्षण और फसल विविधीकरण पर जोर



**शाजापुर।** कृषि विज्ञान केन्द्र, शाजापुर में 4 नवंबर 2026 को 36वीं वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक ऑफलाइन एवं ऑनलाइन माध्यम से आयोजित हुई। बैठक में 12 वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों ने ऑनलाइन तथा 23 ने ऑफलाइन भाग लिया। मुख्य अतिथि डॉ. संदीप सिंह तोमर, विशिष्ट अतिथि डॉ. रमेश असवानी तथा अध्यक्षता डॉ. जी.आर. अम्बावतिया ने की। इसमें डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. ए.के. दीक्षित, डॉ. एस. कौशिक, डॉ. आर.पी. शक्तावत, डॉ. के.एस. भार्गव, नीतेश यादव, स्मृति व्यास, डॉ. विक्रम सिंह, नीलम चौहान, पंकज यवले, सुमित पाटीदार, नीरज मंडलोई एवं किशोर मालवीय शामिल हुए।

केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. गायत्री वर्मा रावल, डॉ. मुकेश सिंह, डॉ. डी.के. तिवारी, रत्नेश विश्वकर्मा, हितेन्द्र इन्दौरिया, निकिता नंद एवं गंगाराम राठौर उपस्थित रहे। प्रगतिशील किसान प्रशांत पाटीदार, मधुसूदन भीमावद, ओमप्रकाश भीमावद, आलोक शर्मा, गणेशचंद्र एवं सतीशचंद्र शर्मा ने भी भाग लिया। डॉ. एस.एस. धाकड़ ने बैठक के उद्देश्य, केन्द्र की गतिविधियों तथा खरीफ 2026 के कार्यों और रबी 2026-27 की कार्ययोजना की जानकारी दी। उन्होंने खेती को लाभ का धंधा बनाने और उन्नत तकनीक अपनाने पर जोर दिया।

बैठक में अलनीनो की स्थिति को देखते हुए जलवायु अनुकूल फसलों एवं उन्नत किस्मों को बढ़ावा देने, प्राकृतिक एवं जैविक खेती, फसल अवशेष प्रबंधन, जल एवं नमी संरक्षण, उन्नत सिंचाई यंत्रों तथा फसल विविधीकरण पर सुझाव दिए गए। फूलों के साथ हल्दी, अदरक और चिया सीड की खेती, कम पानी वाली औषधीय फसलें, आलू-प्याज-लहसुन की उन्नत तकनीक, मोटे अनाज का उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन बढ़ाने की बात कही गई। साथ ही पशुपालन, डेयरी, उद्यानिकी और कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा देने तथा रबी फसलों में एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन अपनाने पर सहमति बनी। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार डॉ. गायत्री वर्मा रावल ने किया।

# दलहन उत्पादन की उन्नत तकनीकों का प्रशिक्षण, बांटी आदान सामग्री



**गोविंदनगर।** कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर द्वारा संकुल अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (सीएफएलडी) दलहन कार्यक्रम के अंतर्गत ग्राम परसवाड़ा, निमरमुन्डा, शिवपुर एवं कन्वार में चयनित किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें किसानों को दलहन फसलों की उन्नत एवं वैज्ञानिक खेती की जानकारी देने के साथ आवश्यक आदान सामग्री का वितरण किया गया।

प्रशिक्षण के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र के सस्य विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. राजेंद्र पटेल ने किसानों को संबोधित करते हुए बेहतर उत्पादन के लिए वैज्ञानिक कृषि तकनीकें अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने मृदा परीक्षण के महत्व को समझाते हुए बताया कि मिट्टी की जांच के आधार पर ही फसलों में आवश्यक पोषक तत्वों एवं उर्वरकों का संतुलित उपयोग करना चाहिए। इससे खेती की लागत कम होने के साथ मिट्टी की उर्वरता भी बनी रहती है।

डॉ. पटेल ने दलहन फसलों की उन्नत बुवाई विधि, उचित बीज दर, कतार एवं पौधों के बीच सही दूरी, समय पर बुवाई तथा बीज उपचार की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बुवाई से पहले बीज उपचार करने से बीज एवं मृदाजनित रोगों से फसल की सुरक्षा होती है और स्वस्थ अंकुरण सुनिश्चित होता है। साथ ही संतुलित पोषण प्रबंधन एवं समय पर कृषि कार्य करने की उपयोगिता बताई।

कार्यक्रम में चयनित किसानों को प्रदर्शन के लिए आवश्यक आदान सामग्री भी वितरित की गई, ताकि वे प्रशिक्षण में सीखी तकनीकों को अपने खेतों में अपना सकें। इस पहल का उद्देश्य दलहन फसलों की उत्पादकता बढ़ाना, खेती की लागत कम करना तथा दलहन का क्षेत्रफल एवं उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों को आधुनिक तकनीकों से जोड़ना है।

# विद्यार्थियों को जैव उर्वरकों एवं फसल रोग नियंत्रण का दिया तकनीकी प्रशिक्षण



**कटनी।** विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ आर्थिक रूप से सशक्त बनाने, आत्मनिर्भरता एवं स्वरोजगार के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से जनपद पंचायत ढीमरखेड़ा के अंतर्गत शासकीय आर.के. गौतम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मुरवारी में जैविक कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्राचार्य संघ रत्न भलावे के मार्गदर्शन में आयोजित इस प्रशिक्षण में जैविक कृषि विशेषज्ञ रामसुख दुबे ने विद्यार्थियों को जैविक खेती, जैव उर्वरकों के उपयोग एवं फसलों में रोग नियंत्रण की तकनीकी जानकारी दी।

प्रशिक्षण के दौरान श्री दुबे ने बताया कि जीरो बजट फार्मिंग एवं जैविक कृषि पद्धतियों को अपनाकर खेती की लागत कम करने के साथ उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है। इसके लिए जैव उर्वरकों एवं लाभकारी जीवाणु कल्चर का उपयोग महत्वपूर्ण है। राइजोबियम, एजोटोबैक्टर और एजोस्पिरिलम जैसे सूक्ष्मजीव मिट्टी में वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर पौधों को उपलब्ध कराने में सहायक होते हैं। राइजोबियम का उपयोग विशेष रूप से दलहनी फसलों में किया जाता है, जबकि एजोटोबैक्टर एवं एजोस्पिरिलम गैर दलहनी फसलों के लिए उपयोगी हैं। इसके अलावा एजोला एवं नील-हरित शैवाल के उपयोग की जानकारी भी दी गई। उन्होंने फसलों में फास्फोरस की उपलब्धता बढ़ाने के लिए फॉस्फेट घोलक जैव उर्वरकों तथा फास्फोरस अवशोषण में सहायक माइकोराइजा के महत्व को समझाया। विद्यार्थियों को बीज उपचार, भूमि उपचार, जड़ एवं कंद उपचार तथा नर्सरी उपचार की व्यावहारिक तकनीकें भी बताई गईं।

फसल सुरक्षा के विषय में उन्होंने उगरा, जड़ सड़न, पौध गलन एवं कंडवा जैसे रोगों के नियंत्रण में जैविक फफूंदनाशक ट्राइकोडर्मा विरिडी के उपयोग की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जैविक आदानों का उचित तरीके से उपयोग करने से मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने, पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ाने और रासायनिक आदानों पर निर्भरता कम करने में मदद मिलती है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षक महेंद्र दोहरे ने सहयोग किया। इस अवसर पर विद्यार्थियों को कृषि आधारित स्वरोजगार अपनाने तथा आधुनिक जैविक कृषि तकनीकों को अपने जीवन में उपयोग करने के लिए प्रेरित किया गया।



# किसानों को दी टिकाऊ एवं वैज्ञानिक खेती की जानकारी

## खेत बचाओ अभियान कार्यक्रम में 30 किसानों ने लिया भाग



**रायपुर/बेमेतरा।** भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान, रायपुर द्वारा संचालित खेत बचाओ अभियान 2026 के अंतर्गत ग्राम पंचायत पहांदा, विकासखंड बेरला, जिला बेमेतरा में कृषक जागरूकता एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 30 किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम में संस्थान की डॉ. श्रावणी सान्याल एवं डॉ. श्रीलता पोलेपोंगु तथा कृषि विज्ञान केंद्र के डॉ. जितेंद्र कुमार जोशी एवं डॉ. चंद्रशेखर खरे ने किसानों को वैज्ञानिक खेती की जानकारी दी।

विशेषज्ञों ने जैविक एवं प्राकृतिक खेती, संतुलित उर्वरक उपयोग, मृदा स्वास्थ्य संरक्षण तथा आधुनिक कृषि तकनीकों पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया। उन्होंने किसानों को रासायनिक उर्वरकों का विवेकपूर्ण उपयोग करने और खेती की लागत कम कर उत्पादन की गुणवत्ता बढ़ाने के उपाय बताये। इस दौरान किसानों ने वैज्ञानिकों से कृषि संबंधी समस्याओं पर चर्चा की। विशेषज्ञों ने स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप समाधान एवं उपयोगी सुझाव दिये।

# एनआईबीएसएम ने किसानों को दिया वैज्ञानिक सरसों उत्पादन का प्रशिक्षण

**रायपुर।** खाद्य तेलों के उत्पादन में आत्मनिर्भरता बढ़ाने और किसानों की आय में वृद्धि के उद्देश्य से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय जैविक प्रतिबल प्रबंधन संस्थान (आईसीएआर-एनआईबीएसएम), रायपुर द्वारा सरसों की वैज्ञानिक खेती को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसी क्रम में संस्थान में फार्मर फर्स्ट कार्यक्रम के अंतर्गत 157 किसानों को सरसों उत्पादन का प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही लगभग 200 एकड़ क्षेत्र में बुवाई के लिए उन्नत किस्म डीआरएमआर 150-35 का बीज वितरित किया गया।




ग्राम बरोंदा, अढ़सेना, गनियारी, असोंदा एवं मोहदी से पहुंचे किसानों को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. पी.के. राय ने कहा कि खाद्य तेलों की बढ़ती मांग को देखते हुए सरसों सहित अन्य तिलहन फसलों का उत्पादन बढ़ाना जरूरी है।

संस्थान के संयुक्त निदेशक डॉ. पंकज शर्मा ने सरसों की वैज्ञानिक खेती की जानकारी देते हुए धान कटाई के बाद खेत की तैयारी, संतुलित उर्वरक प्रबंधन, बीज दर और पौधों के बीच उचित दूरी के बारे में बताया। उन्होंने सरसों में सल्फर की पूर्ति के लिए जिप्सम तथा फास्फोरस के लिए डीएपी के स्थान पर सिंगल सुपर फॉस्फेट (एसएसपी) के उपयोग की सलाह दी। कार्यक्रम में ग्राम बरोंदा के सरपंच प्रदीप मडारिया, अढ़सेना के सरपंच तेजराम पाल, गनियारी के सरपंच राजेंद्र निर्मलकर सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं किसान उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आयोजन फार्मर फर्स्ट परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. पी. मुवन्थन, डॉ. प्रियंका मीना एवं उनकी टीम के सहयोग से किया गया।


कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824

मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675

E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

**कृषक दूत द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकें**




कृषक दूत

मुख्य कार्यालय : एफ.एम. 16, ब्लॉक सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.) फोन (0755) 4233824

E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org



सदस्यता फार्म

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन-0755-4233824

मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675

E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम.....

संस्था का नाम.....

पूरा पता.....

ग्राम.....पोस्ट.....तहसील .....

जिला.....राज्य.....पिन कोड

दूरभाष/कार्या. ..... घर ..... मोबा. : .....

**सदस्यता राशि का ब्यौरा**

| | | | |
|---|---|---|---|
| ■ वार्षिक | : 700/- | ■ द्विवार्षिक | : 1300/- |
| ■ त्रिवार्षिक | : 1900/- | ■ पंचवर्षीय | : 3100/- |
| ■ दसवर्षीय | : 6100/- | ■ आजीवन | : 11000/- |

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र "कृषक दूत" की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में).....(शब्दों में).....

बैंक का नाम..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक.....

दिनांक..... संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान..... प्रतिनिधि का नाम हस्ताक्षर सदस्य

दिनांक..... एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

# प्रदेश की सर्वाधिक दूध देने वाली गाय 'राधा' को देखने तालोद पहुंचे मुख्यमंत्री

## गिर गाय राधा के पशुपालक गौरव रघुवंशी को मिला प्रथम पुरस्कार

**उज्जैन।** प्रदेश में सर्वाधिक दूध उत्पादन करने वाली तालोद गांव की प्रसिद्ध गिर गाय 'राधा' को देखने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव उज्जैन ग्रामीण के ग्राम तालोद पहुंचे। मुख्यमंत्री के आगमन पर ग्रामीणों ने उत्साहपूर्वक उनका स्वागत किया।

उल्लेखनीय है कि भोपाल में आयोजित गोपालक सम्मान समारोह में मुख्यमंत्री ने राधा के पालक गौरव रघुवंशी को प्रदेश में सर्वाधिक दूध उत्पादन के लिए प्रथम पुरस्कार के रूप में एक लाख रुपये की राशि एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया था। इसके बाद मुख्यमंत्री ने तालोद पहुंचकर गाय राधा को देखा तथा उसके पालन-पोषण और देखभाल की सराहना की। उन्होंने कहा कि राधा जैसी उन्नत गिर गायें प्रदेश के पशुपालकों के लिए प्रेरणास्रोत हैं। गौ-पालन ग्रामीण अर्थव्यवस्था की मजबूत आधारशिला है। ग्राम



तालोद स्थित रामकृष्ण गार्डन में रघुवंशी परिवार एवं ग्रामवासियों ने मुख्यमंत्री का पुष्पमाला, साफा और शाल भेंटकर स्वागत किया। स्वागत का नेतृत्व कृषि आदान विक्रेता संघ के प्रदेश सचिव संजय रघुवंशी ने किया। ग्रामीणों ने कहा कि छोटे से गांव की गाय को प्रदेश में प्रथम स्थान मिलना और मुख्यमंत्री का स्वयं गांव पहुंचकर उसे देखना पूरे क्षेत्र के लिए गौरव की बात है।

इस अवसर पर भाजपा ग्रामीण मंडल अध्यक्ष वीरेंद्र आंजना, उज्जैन विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष रवि वर्मा, जनपद अध्यक्ष प्रतिनिधि दीपक चौधरी, मप्र पाठ्य पुस्तक निगम अध्यक्ष सौभाग्य सिंह ठाकुर, जिला पंचायत सदस्य शोभालाल मालवीय, जनपद सदस्य अनिल, मंडल महामंत्री अनिल मालवीय, सरपंच संजय आंजना, रणजीत आंजना सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण, जनप्रतिनिधि एवं पशुपालक उपस्थित रहे।

# दो साल में मध्यप्रदेश बनेगा देश की मिल्क कैपिटल: डॉ. यादव

**भोपाल।** मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश को अगले दो वर्षों में देश की मिल्क कैपिटल बनाया जाएगा। इसके लिए प्रदेश में श्वेत क्रांति 2.0 के तहत डेयरी सहकारिता को मजबूत करते हुए दुग्ध संकलन क्षमता 12 लाख से बढ़ाकर 52 लाख किलोग्राम प्रतिदिन करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उन्होंने कहा कि गौवंश संरक्षण, गौसेवा और पशुपालकों की आर्थिक समृद्धि सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल हैं।

मुख्यमंत्री भोपाल के रवीन्द्र भवन में आयोजित राज्य स्तरीय गौ-पूजन एवं पशुपालक सम्मान समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने बताया कि केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने भोपाल में उन्नत नस्ल की गायों के भ्रूण उत्पादन केंद्र की स्थापना को मंजूरी दी है। इस केंद्र में प्रतिवर्ष एक लाख भ्रूण तैयार किए जाएंगे, जिससे प्रदेश में उन्नत नस्ल के गौवंश और दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा। इसके अलावा बरखेड़ी डोब में 10 हजार गौवंश क्षमता वाली हाईटेक गौशाला का निर्माण किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गौपालन धार्मिक आस्था के साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था और आत्मनिर्भरता का भी मजबूत आधार है। प्रदेश की 3 हजार से अधिक पंजीकृत गौशालाओं में रह रहे 5.51 लाख से अधिक गौवंश के भरण-पोषण के लिए 65.66 करोड़ रुपये की अनुदान राशि अंतरित की गई। वहीं गोपाल-कृष्ण ग्राम पुरस्कार योजना के तहत



466 उत्कृष्ट पशुपालकों के खातों में कुल 2.95 करोड़ रुपये की पुरस्कार राशि भेजी गई। इसमें प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के रूप में क्रमशः एक लाख, 50 हजार और 25 हजार रुपये दिए गए। उन्होंने बताया कि निराश्रित गौवंश के संरक्षण के लिए प्रति गाय अनुदान राशि 20 रुपये से बढ़ाकर 40 रुपये प्रतिदिन कर दी गई है। प्रदेश में गौ-एम्बुलेंस की संख्या भी बढ़ाई जाएगी तथा आधुनिक और आत्मनिर्भर गौशालाएं विकसित की जाएंगी। डॉ. भीमराव अंबेडकर कामधेनु योजना के तहत 25 दुधारू पशुओं की इकाई स्थापित करने के लिए 42 लाख रुपये तक ऋण सहायता और 13.86 लाख रुपये तक अनुदान दिया जा रहा है।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में पशुपालन, मछली पालन, उद्यानिकी, जैविक एवं प्राकृतिक खेती को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। किसानों की आय बढ़ाने के लिए बड़े पशु मेले आयोजित किए जाएंगे, जिनमें उन्नत नस्ल के गौवंश और आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रदर्शन होगा। उन्होंने प्रदेशवासियों से गौवंश संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा का संकल्प लेने का आह्वान किया।

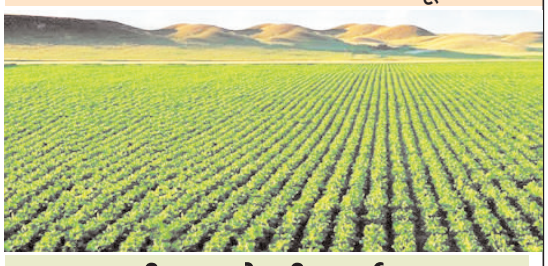
# रबी फसलों की बुवाई 67 लाख हेक्टेयर के पार

**भोपाल।** मध्यप्रदेश में रबी सीजन 2026-27 के दौरान फसलों की बुवाई में तेजी आई है। 13 नवंबर 2026 तक प्रदेश में कुल 67.06 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में रबी फसलों की बोवनी हो चुकी है, जबकि पिछले वर्ष समान अवधि तक 62.10 लाख हेक्टेयर में बुवाई हुई थी। पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में इस बार 4.96 लाख हेक्टेयर अधिक क्षेत्र में बुवाई दर्ज की गई है।

कृषि संचालनालय, मध्यप्रदेश से प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रदेश में रबी फसलों का सामान्य क्षेत्रफल 139.47 लाख हेक्टेयर और वर्ष 2026-27 का बोवनी लक्ष्य 140.82 लाख हेक्टेयर निर्धारित किया गया है। अब तक लक्ष्य के मुकाबले 48.1 प्रतिशत क्षेत्र में बुवाई पूरी हो चुकी है। दलहन फसलों में अब तक 23.92 लाख हेक्टेयर में बोवनी हुई है, जो सामान्य क्षेत्रफल का 93.1 प्रतिशत है। इसमें चना 15.53 लाख हेक्टेयर और मसूर 6.17 लाख हेक्टेयर में बोया गया है। मटर का रकबा 2.21 लाख हेक्टेयर पहुंच गया है। तिलहन फसलों में कुल 12.75 लाख हेक्टेयर में बोवनी हुई है, जो सामान्य क्षेत्रफल का 107 प्रतिशत है। सरसों 11.94 लाख हेक्टेयर और अलसी 0.81 लाख हेक्टेयर में बोई जा चुकी है। सरसों की बोवनी सामान्य क्षेत्रफल के 105.6 प्रतिशत तक पहुंच गई है।

गेहूं की बोवनी 29.28 लाख हेक्टेयर में हुई है, जबकि जौ का रकबा 0.13 लाख हेक्टेयर दर्ज किया गया है। मक्का की बोवनी 0.85 लाख हेक्टेयर में हुई है। कुल खाद्यान्न फसलों का रकबा 54.18 लाख हेक्टेयर पहुंच गया है। वहीं गन्ने की बोवनी 0.14 लाख हेक्टेयर में हुई है। प्रदेश में दलहन और तिलहन फसलों की बोवनी सामान्य क्षेत्रफल के मुकाबले काफी आगे चल रही है, जबकि गेहूं की बोवनी में अभी तेजी आने की संभावना है।

### सबसे अधिक 29 लाख हेक्टेयर में गेहूं की बोनी



### प्रमुख रबी फसलों की बुवाई एवं लक्ष्य

| फसल | सा.क्षे. | लक्ष्य 26-27 | बोनी 26-27 |
|---|---|---|---|
| गेहूं | 99.80 | 91.32 | 29.28 |
| जौ | 0.20 | 0.41 | 0.13 |
| मक्का | 0.79 | 1.49 | 0.84 |
| चना | 17.50 | 19.87 | 15.53 |
| मटर | 1.92 | 3.27 | 2.21 |
| मसूर | 6.28 | 7.86 | 6.17 |
| सरसों | 11.30 | 14.12 | 11.94 |
| अलसी | 0.61 | 1.14 | 0.81 |
| गन्ना | 1.07 | 1.34 | 0.14 |
| रबी योग | 139.47 | 140.82 | 67.06 |

(क्षेत्र- लाख हेक्टेयर में)

# किसान डीएपी के अलावा अन्य उर्वरकों का भी करें उपयोग

**टीकमगढ़।** कृषि विज्ञान केंद्र टीकमगढ़ के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बी.एस. किरार, केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. यू.एस. धाकड़, डॉ. एस.के. जाटव द्वारा किसानों को रबी फसलों- गेहूं, चना, मटर, मसूर एवं सरसों में उर्वरकों में डी.ए.पी. के अलावा विकल्प के रूप में अन्य उर्वरकों के उपयोग की सलाह दी गई। गेहूं में 100:60:40 एन.पी.के. प्रति हेक्टेयर पोषक तत्व की आवश्यकता होती है। इस मात्रा की पूर्ति हेतु 5 बैग यूरिया, 7 बैग एस.एस.पी., 1 बैग पोटाश दूसरे विकल्प के रूप में 4 बैग यूरिया, 3 बैग 12:32:16 तथा तीसरे विकल्प के रूप में 3 बैग यूरिया, 6 बैग अन्नदाता (20:20: 0:13), 1 बैग म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति हेक्टेयर दे सकते हैं। इस तरह चना-मटर-मसूर में 20:60:20 एन.पी.के. प्रति हेक्टेयर आवश्यक है। इस मात्रा को 1 बैग यूरिया, 7 बैग एस.एसपी., 30 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश दूसरे विकल्प के रूप में 3 बैग 12:32:16, तीसरे विकल्प के रूप में 2 बैग अन्नदाता (20:20:0:13), 5 बैग एस.एस.पी., 30 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति हेक्टेयर देना चाहिए। सरसों फसल में 40:20:20 एन.पी.के. कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। 2 बैग यूरिया, 3 बैग एस.एस.पी., 30 कि.ग्रा. पोटाश दूसरे विकल्प के रूप में 2 बैग यूरिया, 1 बैग 30 किग्रा 12:32:16, तीसरे विकल्प के रूप में 1 बैग यूरिया, 2 बैग 20:20:0:13, 30 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति हेक्टेयर देना चाहिये। जिले में ट्रिपल सुपर फास्फेट उर्वरक की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध है, जिसमें 46 प्रतिशत फास्फोरस तत्व की मात्रा होती है, यह उतनी ही मात्रा है जितना डीएपी खाद में फास्फोरस तत्व होता है। किसान भाई डीएपी उर्वरक के स्थान पर ट्रिपल सुपर फास्फेट उर्वरक का उपयोग यूरिया एवं म्यूरेट ऑफ पोटाश या नैनो डीएपी एवं नैनो यूरिया उपयोग कर सकते हैं। जैव उर्वरकों का दलहनी फसलों में राइजोबियम एवं गेहूं में एजोटोबैक्टर के साथ सभी फसलों में पी.एस.बी., के.एस.बी. एवं जेड.एस.बी. का उपयोग अवश्य करें।




Hero MotoCorp Ltd., Regd. Office: The Grand Plaza, Plot No. 2, Nelson Mandela Road, Vasant Kunj Phase-II, New Delhi-110070, India. CIN: L29110DL1984PLC017354. For further information, contact your nearest Hero MotoCorp authorised outlet or CALL TOLL-FREE 1800 266 0018 or visit us on www.heromotocorp.com. Accessories and features shown may not be part of standard fitment. Always wear a helmet while riding a two-wheeler. *Finance offers are at the sole discretion of the financier, subject to its respective T&Cs. *Offer valid only on purchase of new Hero Two Wheeler & Hero GoodLife Enrollment on the purchase/scrapping purchase till 31st July 2026. # The Cash Back of 5% upto ₹5000 is applicable on the transaction between ₹30 000 to ₹1 00 000. The new ranges as shown are ex-showroom prices and valid for a limited period only. Hero MotoCorp reserves the right to modify or withdraw any or all offers without prior notice. *Ex-showroom price of HF Deluxe Canvas Self start variant applicable in Madhya Pradesh.* Terms & Conditions apply.

अधिकृत डीलर: भोपाल: रतेश्याम हीरो (प्रधान पेट्रोल पंप, रायसेन रोड 9289922488, एन.के. रोड 8959905581), साँची हीरो (डी.आई.जी. बंगला, बैरसिया रोड) 9289922885, यूनाइटेड हीरो (कोहेफिज़ा) 9289923150, इटौरा: सुप्रसन्नी हीरो (अन्नपूर्णा रोड) 9289922719, भी.एच. हीरो (एयरपोर्ट रोड) 9289923061, सेवी ऑटोमोबाइल्स (गवरकुआँ) 9289923211, रुक्मणाबाई ऑटोमोटिव्स (एल्फाटीनी स्कायवर के पास) 8871444414, नेहरा ऑटोमोबाइल्स (देवास नाका), 9827141577, ग्वालियर: तनुश्री हीरो (सिटी सेन्टर 9289922371, मुरार 4033028, ग्वल्यू 4072000), लश्कर अंगद हीरो (फूलबाग 9289922483, साँसियाँ पिलखन 9438534), जबलपुर: सुपर हीरो (लाजर सिनेमा लाईन्स) 9289922350, सुदर्शन हीरो (लेजिस्लेटर रॉड 9289922353, गढ़ा गढ़ला 9111100352, रुपौत नाका 9111100344), उज्जैन: डिंपा हीरो (जीगंज, देवास रोड) 9289922304, ग्वालियर हीरो (जिवाजगंज गांधी के सामने) 9289922718, नैतूल: खण्डेलवाल हीरो, 9289922024, सांदौर: संजो हीरो (जन्हेरीलाल संजो पेट्रोल पंप, इटौरा नाका) 9522257567, खजराहा: आनंद हीरो 9289922871, गुना: गगन हीरो 9289922358, औरंगाबाद: आदर्श हीरो 9821743269, हौशंगाबाद: पुष्पांजिला हीरो 9289922360, इटारा: राहुल हीरो 9289922491, विदिशा: पाल हीरो 9289922378, दमोह: इण्डिया मोटो हीरो 9289922673, मालट: कैलाश हीरो (मगवानगंज, गल्लोनिया) 9289922376, टीकमगढ़: आनंद हीरो 9289923112, छतरपुर: आनंद हीरो (झाँसी रोड 9289922374, पन्ना रोड 7389238472), रतलाम: शर्मा हीरो 9289922742, खुरहानपुर: खीनी हीरो 9289922372, देवास: शुजाना हीरो (ए.बी. रोड 9289922488, गंगानगर 9993596302), झाबुआ: नाकोड़ा हीरो 9289922079, कुशी: मल्लपुर्णा हीरो 9289922748, खण्डवा: त्यकर हीरो 9289923018, खरगोन: निगाड़ हीरो 9289922378, गढ़: लक्ष्मी हीरो 9289923176, पीथमपुर: शुभंकरी हीरो 9289923047, सलावद: गणेश हीरो 9289922774, खालघाट: न्यालखाल हीरो 9289922572, डिन्डवाल: सलवार हीरो 9289922805, सण्डला: शुभा हीरो 9289922800, नरसिंहपुर: रतना हीरो 9289922377, रीवा: खंडेला हीरो (टी.पी. नगर 9752263333, इलाहाबाद रोड 9171706391), अतरा: अत्तर हीरो 9289922360, बदिका हीरो 9289923109, खरहरी: विनोद हीरो 9289923109, गुप्ता हीरो 9289922370, कटनी: हर्ष हीरो 9289923166, बैढ़न: कुन्दन हीरो 9289922743, बलरंग मोटर्स 7354559000, सीधी: टान्नेन्द मोटर्स 9289923113, सिंगरौली: सुदर्शन हीरो 9821745435, चौदहवीं: खीनी ऑटोमोबाईल्स, 9821740342, सिंगरौली: शिवम हीरो 9289922787, दतिया: शिव हीरो 9289923172, सतना: गगन हीरो 9289922678, डबगांपुर: आशीष हीरो 9289922832, शिवपुरी: शुभंकरी हीरो 9289922671, बड़वानी: ज्योतिक हीरो 9289922773, खरगोन: बाबा हीरो 9289922933, उत्तराखंड: एकविलेन्स हीरो (गढ़ रोड 9289922376, हल्द्वानी रोड 07412-409600) नीमच: उत्तम हीरो 9289922367, मन्दसौर: रामदर्शन हीरो 9289922369, नागदा: हिलायबल हीरो 9289923045.

रायपुर: मनीयागढ़ हीरो 9209922351, आरंग: अंजन हीरो 9209922984, राजनांदगांव: जय हीरो 9209922357, धमतरी: रत्नोम हीरो 9209922525, कांकेर: राहुल हीरो 9209922034, महासमुंद: वत्सा हीरो 9209922823, बलौदाबाजार: अग्रवाल हीरो 9289922999, आरंग: श्री राम हीरो 9289922968, सेमेरडा: श्री साईं हीरो 9289922835, कवर्धा: सरस्वती हीरो 9289922958, जगदलपुर: विनायगल हीरो 9289923064, दंतेवाड़ा: जय विनय हीरो 9289922990, डल्लीराजहरा: लक्ष्मी हीरो 9209922903, भाटापारा: कुशल हीरो 9209922052, बिलासपुर: इंडियन हीरो 9209922355, चौहान मोटर्स 9209923017, दुर्ग: उत्सव हीरो 9209923104, उत्सव हीरो 7000545300, बिलासपुर: धन्या हीरो 9209922464, गौरेलेरी हीरो 9289922706, अम्बिकापुर: आनंद हीरो 9289922359, सरगुजा हीरो 9289923110, रायगढ़: साहि हीरो 9289922812, छत्तीसगढ़ हीरो 9289923057, रायगढ़: गोयल हीरो 9289922373, आदित्य हीरो 9289923091, जांजगीर: आनंद हीरो 9209922772, चेकुंठपुर: आर.के. हीरो 9209922812, जशपुर: आकाश हीरो 9209922909.